Student ADVISOR®

A different way of learning ...

हिन्दी

व्याकरण व पाठ्यपुस्तक

उत्तर पुस्तिका

कक्षा

6

हिन्दी–6

1 विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** बरसाने **(ख)** सरसाने
   (ग) भीषण **(घ)** संकट
   (ङ) पूर्ण
2. **(क)** कवि के अनुसार हमारा ध्येय स्वतन्त्रता प्राप्त करना है।
   (ख) झंडे को ऊँचा रखने से तात्पर्य है कि भारतवासी तिरंगे को गौरव का प्रतीक मानते हैं। कवि चाहता है कि ऐसे गौरवशाली देश का राष्ट्रीय झण्डा 'तिरंगा' सदैव ऊँचा ही रहे, जिससे हमारे देश का मान-सम्मान सदा बना रहे।
   (ग) कवि ने झण्डे को 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' इसलिए कहा है क्योंकि यह 'तिरंगा' सम्पूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त करने वाला है। साथ ही हमारी राष्ट्रीय भावनाओं का प्रमुख प्रेरणा स्रोत है।
   (घ) कवि मातृभूमि को स्वतन्त्रता दिलाने के उद्देश्य से वीरों को जान की बाजी लगा देने के लिए बुला रहा है।
   (ङ) तिरंगे को देखकर वीरों के मन में अपने देश की रक्षा हेतु जोश, आनन्द एवं साहस के भाव जाग्रत होते हैं।
   (च) स्वतन्त्रता संग्राम में भारत माँ के वीर सपूतों के साहस और पराक्रम को देखकर शत्रु काँप उठते हैं।
3. **(क)** कवि कहता है कि तिरंगा झण्डा हमारी मातृभूमि का गौरव है। यह सदैव ऊँचा रहे और देश का गौरव बढ़ाता रहे।
   (ख) कवि कहता है कि आजादी के भीषण संग्राम में भारत के स्वतंत्रता सेनानियों का जोश तिरंगे झण्डे को देखकर प्रत्येक क्षण बढ़ता जाता था अर्थात् वे लोग दुगने उत्साह के साथ स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते थे।
   (ग) कवि कहता है कि इस झण्डे के नीचे रहते हुए हम निर्भय होकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् हम संगठित रहेंगे तो सदैव स्वतंत्र रहेंगे।
   (घ) कवि कहता है कि भारत की शान एवं गौरव के प्रतीक इस झण्डे की प्रतिष्ठा में तनिक भी आँच नहीं आनी चाहिए। इसकी रक्षा में भले ही हमें अपने प्राणों को न्योछावर करना पड़े।

भाषा की बात

1. छात्र स्वयं शुद्ध उच्चारण करें।
2. पूर्ण, शान, वीरो, ऊँचा।
3.

शब्द	पर्यायवाची
सुधा -	अमृत, अमिय
विश्व -	जगत, संसार
झंडा -	ध्वज, पताका
माता -	जननी, माँ
शत्रु -	अरि, बैरी
तन -	देह, शरीर

4. **शब्द -** **विलोम**
   स्वतंत्र- परतंत्र
   शत्रु - मित्र
   नीचे - ऊपर
   विजय- पराजय

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (ब), **3.** (द), **4.** (स), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. तन-मन **2.** काँपे
3. भय-संकट **4.** ध्येय
5. देश-धर्म

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (घ)।

2 कटुक वचन मत बोल

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** कठोर **(ख)** औषधि
2. **(क)** अगर जीभ **(ख)** मानव
   (ग) मधुर **(घ)** नर्क
3. **(क)** मालिक ने लुकमान की बुद्धिमानी की परीक्षा प्रश्न पूछकर ली और कहा– अगर तुम उत्तर देने में कामयाब हो गए तो तुम्हें गुलामी से छुट्टी दे दी जाएगी।
   (ख) जिज्ञासु ने कन्फ्यूशस से यह प्रश्न किया कि सबसे दीर्घजीवी कौन होता है?
   (ग) श्रीमती शास्त्री नौकर पर क्रोधित इसलिए हुईं क्योंकि उससे कोई काम बिगड़ गया था।
   (घ) राजा ने स्वप्न में देखा कि उसके सारे दाँत टूट चुके हैं।
   (ङ) बुलबुल– (*सुबह-सुबह ताजे खिले फूल से*) "अभिमानी फूल! इतराओ मत! इस बाग में तुम्हारे जैसे बहुत फूल खिल चुके हैं।"
   फूल– (*हँसकर*) ''मैं सच्ची बात पर नाराज नहीं होता, पर एक बात है कि कोई भी अपने प्रिय से कड़वी बात नहीं कहता।''
4. **(क)** लुकमान ने अपने मालिक से दोनों प्रश्नों के उत्तर में जीभ ही इसलिए कहा क्योंकि यदि जीभ अच्छी है, तो सब अच्छा है और जीभ अच्छी नहीं है तो सब बुरा है अर्थात् जीभ के कारण ही सारी बुराई और भलाई है।
   (ख) जो नम्र होता है, वही अधिक समय तक जीता है। पाठ के अनुसार एक उदाहरण यह है कि जीभ दाँतों से पहले जन्म के समय ही मुँह में होती है और दाँत बाद में आते हैं। दाँत अपनी कठोरता के कारण पहले चले जाते हैं परन्तु जीभ कोमल होती है, लचीली होती है, नम्र होती है इसलिए वह अधिक समय तक रहती है।
   (ग) जीभ के दुरुपयोग से समाज में नर्क के समान कष्टमय वातावरण पैदा हो जाता है। मीठी वाणी के प्रयोग से ही समाज में खुशहाली आ सकती है परन्तु जब उसका सही उपयोग नहीं होता तो पूरा संसार संकट में पड़ जाता है। महाभारत का युद्ध भी जीभ के दुरुपयोग के कारण ही हुआ था।
   (घ) प्रस्तुत कथन का भाव यह है कि सभी लोगों को वाणी मिली हुई है लेकिन उसका सही उपयोग सबको नहीं आता। किसी की वाणी प्रेम की वर्षा करती है, तो किसी के द्वारा बोले गए शब्द कई झगड़ों को पैदा कर देते हैं। अत: बोलने की कला किसी-किसी को ही प्राप्त है।
   (ङ) वस्तुत: पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा विनम्र और मधुर बोलना चाहिए। विनम्रता और प्रेमपूर्ण भाषा के प्रयोग से मनुष्य दीर्घजीवी होता है। कड़वी बातें झगड़ों का कारण बनती हैं। वाकचातुर्य ही व्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है।
5. **(क)** मनुष्य की जीभ मात्र तीन इंच लम्बी होती है लेकिन इसके द्वारा बोले गए कटुवचन छ: फुट लम्बे आदमी के तन-मन को वेध देते हैं। वह मरे के समान हो जाता है। इस वाणी का दुरुपयोग ही तो झगड़ों की जड़ है।
   (ख) किसी का हृदय कटु वाणी से इसलिए दु:खी नहीं करना चाहिए क्योंकि कटु वचन तीर के समान कानों के मार्ग से प्रवेश करके सारे शरीर को वेध डालते हैं और शरीर को दु:ख पहुँचाते हैं।
   (ग) मनुष्य बातों के द्वारा ही असम्भव कार्य को सम्भव बना सकता है। मृदु वचन और नम्रतापूर्ण आचरण से मनुष्य महत्वपूर्ण बन सकता है और इसके विपरीत आचरण से वह अपने महत्व को खो बैठता है। अत: बात बोलने के ही माध्यम से व्यक्ति समाज में आदरणीय और निरादरणीय बनता है।
6. **(क)** यदि लुकमान की जगह मैं होता तो उसके प्रश्नों का यह उत्तर देता कि संसार में जीभ सारी भलाई और बुराई की जड़ है। जीभ के मृदु वचन बोलने पर सर्वत्र सुख, कटु वचन बोलने पर सर्वत्र कलह फैलता है। अत: मेरा भी उत्तर वही होता।
   (ख) यदि हमें वाणी का वरदान न मिला होता तो हम अपने मन के भावों को अपने दूसरे साथियों से न कह पाते। दूसरों के भावों को सुनकर उनकी सहायता न कर पाते।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक की सहायता से शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें और लिखें।
2. जिज्ञासु, दार्शनिक, हृदय, प्रशंसा, हँसकर।

3. **स्वप्न—** स्वप्न देखने के साथ-साथ कर्मशील भी बनना चाहिए।

लोकप्रिय—मधुर वाणी व्यक्ति को लोकप्रिय बना देती है।

ऐश्वर्य— प्रभु का ऐश्वर्य संपूर्ण जगत में फैला हुआ है।

कारावास— जवाहरलाल नेहरू ने आजादी के लिए काफी समय कारावास में बिताया।

अभिमानी— रावण अभिमानी व्यक्ति था।

4. **(क) विकारी शब्द—** लड़की, तालाब, गाँव, नगर।

(ख) अविकारी शब्द— ही, भी, तथा, इधर।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. बुद्धिमान **2.** मानव **3.** वाक्चातुर्य
4. दाँत **5.** कड़वा

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

3 हार की जीत

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** मंदिर में **(ख)** अपाहिज बनकर

2. **(क)** छवि **(ख)** अस्तबल
(ग) कँगले **(घ)** गरीबों

3. **(क)** बाबा भारती अपने घोड़े को सुलतान नाम से पुकारते थे।

(ख) खड्गसिंह एक कुख्यात डाकू था।

(ग) खड्गसिंह बाबा भारती के पास घोड़ा देखने के लिए गया था।

(घ) खड्ग सिंह ने जाते समय बाबा भारती से कहा कि बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

(ङ) खड्ग सिंह ने अपने को वैद्य दुर्गादत्त का सौतेला भाई बताया था।

4. **(क)** बाबा भारती गाँव से बाहर एक मन्दिर में रहते थे और भगवान की पूजा किया करते थे। खाली समय में अपने घोड़े सुलतान की सेवा किया करते थे। यही उनकी दिनचर्या थी।

(ख) यह कथन बाबा भारती ने डाकू खड्ग सिंह से कहा क्योंकि खड्गसिंह सुलतान को देखने की चाह लेकर आया था।

(ग) अपाहिज ने बाबा भारती से कहा ''ओ बाबा! इस कँगले की सुनते जाना।'' बाबा भारती ने पास आकर कष्ट पूछा तो उसने बताया कि बाबा मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। यहाँ से तीन मील दूर 'रामवाला' तक जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो तो परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।

(घ) बाबा भारती ने खड्गसिंह से इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करने के लिए इसलिए कहा क्योंकि इस घटना को जानकर लोगों का गरीब और दीन-दुखियों से विश्वास उठ जाएगा।

5. **(क)** खड्गसिंह इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। वह सुलतान को किसी भी तरह प्राप्त कर लेना चाहता था लेकिन उसका इस तरह घोड़े को ले जाना उचित नहीं था, क्योंकि इस घटना को जानने के बाद गरीब की कोई भी व्यक्ति सहायता करने के लिए तैयार नहीं होगा और इस तरह गरीबों का विश्वास खत्म हो जाएगा।

(ख) बाबा भारती के शब्द खड्ग सिंह के कानों में लगातार गूँज रहे थे। वह सोचने लगा कि कितने ऊँचे विचार हैं। यह बाबा वास्तव में मनुष्य न होकर साक्षात देवता है। इन विचारों ने उसके हृदय को बदल दिया और उसने घोड़े को चुपचाप ले जाकर उनके अस्तबल में बाँध दिया और जब वहाँ से चला तो उस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। उसे लगा कि आज उसने कोई अच्छा काम किया है।

6. **(क)** यदि बाबा भारती घोड़ा नहीं दिखाते, तो खड्गसिंह उस घोड़े को चुराने का प्रयास करता।

(ख) यदि बाबा भारती अपाहिज की आवाज सुनकर घोड़े को नहीं रोकते तो खड्गसिंह किसी अन्य योजना के द्वारा घोड़े को छीनकर ले जाने का प्रयास करता।

(ग) यदि बाबा भारती की जगह मैं होता तो उस अपाहिज बने डाकू खड्गसिंह द्वारा घोड़े

को छीनकर ले जाने पर अनुनय-विनय से रोकने की कोशिश करता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक की सहायता से उच्चारण करने का अभ्यास करें और लिखें।
2. बलवान, सुलतान, नमस्कार, प्रार्थना।
3. **करुणा—** सिद्धार्थ को पक्षी की छटपटाहट पर करुणा आ गई थी।

   अपाहिज—हमें दीन-दुखी और अपाहिजों की सहायता के लिए तैयार रहना चाहिए।

   पवित्र— माँ शारदा के पवित्र दर्शन के लिए प्रतिवर्ष यात्री जाते हैं।

   घमण्ड— व्यक्ति का घमण्ड उसके पतन का कारण बन जाता है।
4.

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
कीर्ति, खेत, बाबा भारती, खड्ग सिंह, मंदिर	तुम्हें, उसकी, उन्हें, उनका, उस	कुख्यात, पवित्र, प्रसन्न, सुन्दर, विचित्र	चिल्लाना, हिनहिनाना, तनना, बोला, दिखाया

5. अपाहिज; अस्तबल; प्रशंसक; परनिंदक।
6. **(क)** का, **(ख)** की, **(ग)** का, **(घ)** को, **(ङ)** की, **(च)** के।
7. • 'इया' प्रत्यय वाले शब्द—

   (i) दु:ख + इया = दुखिया

   (ii) लिख + इया = लिखिया

   (iii) लट्ठ + इय = लठिया

   (iv) साथ + इया = साथिया

   (v) खाट + इया = खटिया

   • 'आहट' प्रत्यय वाले शब्द—

   (i) मुस्करा + आहट = मुस्कराहट

   (ii) चिल्ला + आहट = चिल्लाहट

   (iii) खिलखिला + आहट = खिलखिलाहट

   (iv) किलकिला + आहट = किलकिलाहट

   (v) बिलबिला + आहट = बिलबिलाहट

अनुभव विस्तार

कहानी के आगे

...अपना रथ रोक दिया। राजा दयालु था। उसने भिखारी को रथ में बिठा लिया और उसे राजमहल ले गया। राजा ने भिखारी को भोजन कराया और धन देकर उसकी सहायता की, जिससे वह भीख माँगने का काम बंद कर कोई कारोबार कर सके। राजा की दया-भावना को देखकर भिखारी की आँखों में आँसू आ गए। भिखारी ने राजा को धन्यवाद दिया और अपने घर चला गया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (ब), **4.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. खड्गसिंह **2.** घोड़ा
3. वायु-वेग **4.** अपाहिज
5. खड्गसिंह

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

4 अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** भूमण्डलीकरण के **(ख)** सन्तोष।
2. **(क)** भाव **(ख)** आन्दोलन

   (ग) बात **(घ)** हिन्दुस्तान
3. **(क)** हम सारी दुनिया में टी. वी. और टेलीफोन के माध्यम से घूम रहे हैं।

   (ख) साक्षरता से आशय किताबी ज्ञान से है।

   (ग) भूमण्डलीकरण का परिवारों पर यह प्रभाव पड़ा है कि वे दूर-दूर बिखर गये हैं। पारिवारिक समरसता समाप्त हो रही है। आपसी सम्बन्ध टूट रहे हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे से बातचीत तक नहीं कर रहे हैं। उनमें आपसी सम्बन्ध समाप्त होते चले जा रहे हैं।

   (घ) मन के भावों को उत्साहित कर देने वाली काव्य धारा अब लुप्त हो रही है। मन में देश-

प्रेम, समता, एकता, मर्यादा पालन, अन्याय की समाप्ति तथा न्याय की प्राप्ति के लिए जन-जन को जगाने वाली काव्य रचनाओं का सृजन अब नहीं हो रहा है।

(ङ) उक्त पंक्ति के माध्यम से कवि बताना चाह रहा है कि लोगों में धन एकत्र करने की लालसा बढ़ गई है। यद्यपि धनाभाव नहीं है फिर भी वे उचित-अनुचित साधनों से धन एकत्र करने में जुटे हुए हैं। आन, मान तथा शान की उन्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं है।

(च) अपने नैतिक मूल्यों के बल पर भारत ने जो विश्व गुरु की पदवी प्राप्त की थी तथा विश्व में जो पहचान बनाई थी किन्तु अब हम भारतीय अपने देश, अपने समाज, अपनी संस्कृति सभ्यता को भूल चुके हैं। अत: अब हमें स्वयं को पहचानना होगा।

(छ) जिन कवियों के नामों का उल्लेख किया है वे हैं— कुलगुरु कालिदास, राजा भोज, सूरदास, तुलसीदास, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रामधारी सिंह 'दिनकर' रहीम और रसखान आदि।

4. **(क)** कवि कहता है कि टी. वी., टेलीफोन तो बज रहे हैं लेकिन परिवार के सदस्य आपस में बातचीत नहीं कर रहे हैं। आज के कवियों द्वारा रचित कविताओं में टूटते परिवारों की तरह ही बिखरे हुए छंद दिखाई देते हैं।

(ख) कवि कहता है कि आज के नेताओं ने राजनीति को कूटनीति में बदल दिया है। वे अपने स्वार्थ में लगे हुए हैं। उन राजनेताओं में अब जन-सेवा का भाव नहीं रहा। समता और एकता विलुप्त हो चुकी है। नाव चलाकर स्वधर्म का पालन करने वाला रामराज का केवट, पता नहीं कहाँ खो गया है।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक की सहायता से उच्चारण करें और लिखें।

2. हिन्दुस्तान, दुनिया, परिवार, मृदु, सन्तोष।

3. **संस्कार—** भारतीय संस्कृति में में उच्च संस्कार हैं।

आन्दोलन— देश की आजादी के लिए देशवासियों ने अनेक आन्दोलन चलाए।

वैभव— भारत भूमि सांस्कृतिक वैभव से परिपूर्ण है।

राजनीति— देश की राजनीति अब भटक चुकी है।

शिक्षा—व्यक्ति को शिक्षा का उद्देश्य पहचानना चाहिए।

4. ऊँचे-ऊँचे, जन-जन, बड़ी-बड़ी, बड़े-बड़े, जन्म-जन्म, दैव-विधान, कूट-चाल, जन-सेवा, राम-राज।

5. ताकत, जरा, फूहड़, टी. वी., टेलीफोन।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (द), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. महानगर **2.** परिवारों

3. सन्तोष **4.** हनुमान

5. फूहड़

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

5 व्याकरण – परिवार

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** क्रिया देवी के बिना

(ख) विशेषण

2. **(क)** आघात **(ख)** विशेषण

(ग) क्रिया देवी **(घ)** सम्बन्धबोधक

3. **(क)** संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

(ख) सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों के बदले में आते हैं।

(ग) समुच्चयबोधक दो या दो से अधिक वाक्यों को जोड़ने अथवा अलग करने का काम करते हैं।

4. **(क)** संज्ञानन्द और क्रिया देवी के तीन बच्चे हैं—एक पुत्र और दो पुत्रियाँ। पुत्र का नाम सर्वनाम है। उनकी दो बेटियों के नाम

हैं—विशेषण तथा क्रिया-विशेषण। उनके दो नौकर भी हैं जिनके नाम हैं—सम्बन्धबोधक तथा समुच्चयबोधक।

(ख) व्याकरण के परिवार में विशेषण का बहुत बड़ा महत्व है। विशेषण संज्ञा और सर्वनाम की विशेषताओं, उनके गुणों को बताने वाला शब्द है। विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं— सामान्य अवस्था, तुलनात्मक अवस्था, उत्तमावस्था। जैसे— महान, महानतर, महानतम।

5. **(क)** क्रिया-विशेषण द्वारा किसी वाक्य में क्रिया की विशेषता बताई जाती है; जबकि विशेषण अपने वाक्य में प्रयुक्त किसी संज्ञा या सर्वनाम की ही विशेषता स्पष्ट करता है।

(ख) संकट के समय यदि हमारे मित्र अचानक साथ छोड़ दें, तो हमें अचम्भा या विस्मय होगा। लेकिन हम प्रयास करेंगे कि उस मित्र का सहयोग हमको मिले। यदि किसी कारण ऐसा नहीं होता है तो हम स्वयं संकट का मुकाबला करने को तैयार रहेंगे।

(ग) विस्मयादिबोधक शब्द हमारे मन के भय, आक्रोश, कष्ट, खुशी, प्रशंसा, अचम्भा आदि भावों को प्रकट करते हैं।

6. **(क)** हम समुच्चयबोधक शब्दों के अभाव में अपनी बात पूरी कर तो सकते हैं लेकिन अनावश्यक रूप से शब्दों की आवृत्ति बढ़ने से वाक्य की संरचना का रूप बिगड़ सकता है।

(ख) यदि भाषा में क्रिया का प्रयोग न किया जाए तो वाक्य अधूरा रहेगा और बात का उद्देश्य पता नहीं चलेगा।

(ग) यदि व्याकरण में सर्वनामों का प्रयोग न होता तो संज्ञाओं के प्रयोग बार-बार करने पड़ते जिससे हमें भाषा को बोलने, पढ़ने अथवा लिखने के प्रति अरुचि बनी रहती।

भाषा की बात

1. **सन्नाटा पसरना—** कोरोना काल में सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहता था।

गप्पें लड़ाना— चौराहे पर बैठे लोग आपस में गप्पें लड़ाते रहते हैं।

आदत में शुमार होना— बड़ी-बड़ी बातें करना राहुल की आदत में शुमार है।

हाथ बँटाना— बच्चों को घर के कामकाज में हाथ बँटाते रहना चाहिए।

2.

शब्द	विलोम शब्द
सुत	सुता
मित्र	शत्रु
प्रशंसा	निंदा
हर्ष	विषाद
नीरस	सरस
सत्य	असत्य
आशा	निराशा

3. **घर—** गृह, सदन, भवन।

पुत्र— बेटा, सुत, तनय।

पुत्री— सुता, बेटी, तनया।

हाथ— कर, हस्त, बाहु।

मित्र—दोस्त, सखा, साथी।

4.
1. यह कथन विशेषण का है। विशेषण का काम है संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताना।
2. यह कथन क्रिया विशेषण का है। क्रिया विशेषण की विशेषता बताती है।
3. यह वाक्य संज्ञानन्द का है। किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।
4. यह कथन सर्वनाम का है। सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के बदले करते हैं।

5. (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया

(ग) विकारी शब्द (घ) अविकारी शब्द

(ङ) भूतकाल

6.

● संज्ञा	भेद
प्राणियों	जातिवाचक संज्ञा
वाणी	जातिवाचक संज्ञा
वरदान	भाववाचक संज्ञा
● संज्ञा	भेद
मानव	जातिवाचक संज्ञा
सत्कर्मों	भाववाचक संज्ञा
स्वर्ग	भाववाचक संज्ञा
पृथ्वी	जातिवाचक संज्ञा
● संज्ञा	भेद
प्रेम	भाववाचक संज्ञा

व्यवहार	भाववाचक संज्ञा
● संज्ञा	भेद
गोपाल कृष्ण गोखले	व्यक्तिवाचक संज्ञा
बचपन	भाववाचक संज्ञा
बुद्धि	भाववाचक संज्ञा
● संज्ञा	भेद
जीवन	भाववाचक संज्ञा
बुढ़ापा	भाववाचक संज्ञा
● संज्ञा	भेद
गंगा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
हिमालय	व्यक्तिवाचक संज्ञा
● संज्ञा	भेद
लड़के	जातिवाचक संज्ञा

● संज्ञा	भेद
पुस्तक	जातिवाचक संज्ञा

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (ब), **4.** (ब), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अर्द्ध गोलाकार **2.** पत्रिका
3. संस्कृत **4.** देवभाषा
5. अपभ्रंश

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (ख)।

6 विजय गान

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. (क) (ii) बाधाएँ **(ख)** (iv) पाप से

2. (क) तलवारों **(ख)** अंगार
(ग) काल स्वयं **(घ)** अगस्त्य

3. (क) वीरों के पथ में बाधाएँ बरस रही हैं।

(ख) नभमण्डल से अंगार उगलने के लिए कहा गया है।

(ग) कवि समुद्र को हिमालय से, सूर्य को चन्द्रमा से, धरती को आकाश से टकरा देना चाहता है।

(घ) कवि नवयुवकों को तपस्वी इसलिए बन जाने को कह रहा है जिससे उनके ऊपर माया–मोह का प्रभाव न पड़ सके।

(ङ) प्राणों की पतवार से कवि का आशय है कि हे वीर पुरुषों तुम बाधाओं के सागर को पार करने में प्राणों की बाजी लगा दो ताकि किसी तरह का डर तुम्हारे सामने न टिक न सके।

(च) जब वीर पक्का इरादा कर लेते हैं, तब काल उनसे डरने लगता है।

(छ) कवि वीरों को विजय पथ पर बाधाओं की चुनौती स्वीकार करते हुए आगे बढ़ने के लिए कह रहा है। मनुष्य जीवन एक महासंग्राम है। इसमें अनेक तरह की रुकावटें आती हैं। इन रुकावटों पर सफल होने के लिए साहसपूर्वक आगे बढ़ना चाहिए।

मनुष्य प्राण-शक्ति के सहारे विपत्तियों के सागर को पार करने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

4. (क) कवि कहता है कि हे वीरो! तुम्हारे मार्ग में रुकावटों की वर्षा हो रही है। वर्षा जलधारा के समान ये बाधाएँ झड़ी लगाकर बरस रही हैं; परन्तु हे वीरो! तुम्हें घबराना नहीं है क्योंकि तुम वीर हो और वीर तो अपनी प्राण शक्ति की पतवार से विपत्तियों के सागर को पार कर जाते हैं।

(ख) कवि कहता है कि हे वीरो! तुम्हें किसी भी प्रकार का मोह अपने जाल में न जकड़ सके इसके लिए तुम एक तपस्वी की तरह रूप धारण कर लो तथा तुम लोहे के सदृश हृदय वाले बन जाओ कि काल भी तुमसे भयभीत हो उठे। तुम्हें ध्रुव के समान पक्के इरादों वाला बनना है।

भाषा की बात

1. छात्र अपने अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करना सीखें।

2. वीरवर, निश्चय, तलवार, अंगार।

3. ● **हिमाचल—**भारत के एक प्रांत का नाम हिमाचल प्रदेश है।

● **मंडल—** मंडल में लोगों की भीड़ जमा हो रही थी।

● **अम्बर—** गर्मियों में अम्बर से आग बरसने लगती है।

● **हृदय—** दयावान व्यक्ति का हृदय बड़ा होता है।

4. सम्हल-सम्हल, उमड़-उमड़, घुमड़-घुमड़।
5. 'अवनी-अम्बर में : 'अ' वर्ण की।
   'पाप-ताप' में 'प' वर्ण की।
   ध्रुव से ध्रुवतर में 'ध्रु' एवं व वर्ण की।
6. अज्ञानता और असफलता।
7. **सूर्य** = दिवाकर, दिनकर, आदित्य।
   चन्द्रमा = शशि, सुधांशु, सुधाकर।
   सिन्धु = समुद्र, सागर, वारिधि।
   अग्नि = आग, पावक, हुताशन।
   अम्बर = आकाश, नभ, गगन।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (स), **4.** (स), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. सम्भल-सम्भल **2.** टकराने
3. जल **4.** नभ मंडल
5. काल

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

विविध प्रश्नावली–1

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) कन्फ्यूशस
   (ख) (iii) भवन
   (ग) (ii) विक्रमादित्य
   (घ) (ii) प्रत्यय
   (ङ) (ii) भास्कर
2. **(क)** महाभारत **(ख)** सुलतान
   (ग) सन्तोष **(घ)** 'वि'
   (ङ) मीठी
3. **(क)** स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीय वीरों के साहस व पराक्रम को देखकर शत्रु काँप रहे थे।
   (ख) अपना घोड़ा वापस पाकर बाबा भारती ने सन्तोष की साँस ली और बोले कि अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।
   (ग) वर्तमान समय में दी जाने वाली शिक्षा संस्कारविहीन है, जिससे जन-सेवा का भाव समाप्त हो रहा है।
   (घ) संज्ञानन्द की पत्नी का नाम क्रियादेवी था।
   (ङ) खाई-कुएँ से आशय है वीरों का मार्ग कठिनाइयों और बाधाओं से भरा होता है।
   (च) पतित पावनी शब्द 'गंगा माता' के लिए कहा गया है।
4. **(क)** शास्त्रीजी ने अपनी पत्नी को जो पंक्तियाँ सुनायीं। वे निम्नवत् हैं—

   कुदरत को नापसन्द है सख्ती जबान में,
   इसलिए तो दी नहीं हड्डी जबान में।
   जो बात कहो, साफ हो, सुथरी हो, भली हो।
   कड़वी न हो, खट्टी न हो, मिश्री की डली हो।

   शास्त्रीजी के द्वारा कही गई पंक्तियों को सुनकर उनकी पत्नी का क्रोध हमेशा के लिए समाप्त हो गया।

   (ख) बाबा भारती द्वारा कहे गए शब्द खड्गसिंह के दिमाग में गूँजते रहे वह सोचने लगा कि बाबा को घोड़े के छीन लेने का कोई कष्ट नहीं है, उन्हें तो केवल यही ख्याल रहा कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। कितने ऊँचे विचार हैं? बाबा भारती कोई सामान्य आदमी नहीं, यह तो निश्चय ही कोई देवता हैं। इन बातों से खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन हो गया और उसने बाबा भारती के घोड़े को वापिस कर दिया।

   (ग) अगस्त्य ऋषि अपने हाथों की अंजलि जैसे छोटे साधन में विशाल समुद्र के जल को भरकर पी गए थे। उसके घमण्ड को चूर-चूर कर दिया था। अत: कवि भारतीयों को उनके इतिहास का परिचय दोहराता है और कहता है पक्के इरादों वाले हे वीरवरो! तुम भी विपत्तियों पर विजय पाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते

हो। कवि ने भारतीय वीरों में अपने मजबूत इरादे को बनाए रखने और अपने उद्देश्य से न डिगने के लिए अगत्स्य ऋषि का उल्लेख किया है।

(घ) 'अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?' कवि ने यह प्रश्न इसलिए किया है क्योंकि भूमण्डलीकरण के इस युग ने हिन्दुस्तान की संस्कृति और सभ्यता को बदलकर रख दिया है। धन के लालच में लोगों के पारिवारिक सम्बन्ध टूट चुके हैं। भारत से वैदिककालीन शिक्षा समाप्त हो चुकी है। मन्त्रों का घोष यन्त्रों की आवाज तले लुप्त हो चुका है। शिक्षा संस्कारविहीन हो चुकी है। गीतों और कवियों में मधुमास की सरसता, श्रेष्ठ, काव्य सृजन की शक्ति का ह्रास हो चुका है। इन सभी बातों को सोचकर कवि को अपना हिन्दुस्तान कहीं नजर नहीं आता है।

5. **(क)** कवि देश के वीरों को संबोधित करते हुए कहता है कि तुम्हें अत्यन्त पक्के इरादों वाला हो जाना चाहिए। तुम्हें अगस्त्य ऋषि के समान बन जाना चाहिए, जिससे बाधाओं के दुर्दम (कठिनाई से वश में किए जाने वाला) सागर को भी वश में करना तुम्हारे लिए बिल्कुल भी कठिन नहीं होगा। अतः हे श्रेष्ठ वीरो! तुम्हें सम्हल कर तलवार की धार पर चलना है अर्थात् तुम्हें चुनौतीपूर्ण कार्य कर दिखाना है।

(ख) कवि कहता है आज कविकुल गुरु कालिदास की सी काव्य रचना करने की शक्ति नजर नहीं आती। मिठास भरा शृंगार रस तो आज के फूहड़ गीतों में बदल गया है। मन में उत्साह भर देने वाली कविता की धारा ही कहीं विलुप्त हो गयी है। साथ ही साहित्य को सम्मानित राजा भोज जैसे साहित्य प्रेमी भी नहीं दिखाई पड़ रहे।

6. **(क)** वाणी का प्रयोग हर कोई ठीक से नहीं कर पाता। ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोगों की वाणी से प्रेम झलकता है, तो किसी की बात इतनी चुभने वाली होती है कि झगड़ा हो जाता है। कड़वी बात संसार में कितने ही झगड़े पैदा कर देती है और उसका प्रभाव बहुत ही दुःखदायी होता है। इसलिए लेखक कह रहा है कि वाणी (जीभ) सभी को प्राप्त है परन्तु उससे बोलना तो किसी-किसी को ही आता है। अर्थात् बहुत कम लोग बोलना जानते हैं।

(ख) व्यक्ति का स्वभाव होता है कि अपनी या अपनी किसी वस्तु की प्रशंसा सुनकर मन खुश हो जाता है। इसी बात को लेकर लेखक कहता है कि बाबा भारती भले ही संन्यासी थे लेकिन थे तो मनुष्य ही। खड्ग सिंह के मुख से अपने घोड़े की तारीफ सुनने की चाह उनके मन में जाग उठी और वे व्याकुल हो उठे।

(ग) लेखक का मन अपनी मातृभूमि के प्रेम में रच-वश गया है। उसके अन्दर किसी भी अन्य वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रह गई है जिसके लिए उन्हें अपनी मातृभूमि का त्याग करना पड़े। उसकी यह हार्दिक इच्छा है कि वह अपने जीवन के शेष समय को यहीं रहकर व्यतीत करे तथा जिस मातृभूमि ने उसे जन्म दिया, जिसका अन्न-जल खा-पीकर बड़ा हुआ, उसी मातृभूमि की पवित्र गोद में रहकर अपनी जीवन लीला समाप्त करे अर्थात् अपनी प्यारी भूमि की गोद में ही वह अपने प्राण त्यागने का सौभाग्य प्राप्त करे।

7. छात्र/छात्रा स्वयं लिखें।

8. 1. शिवा के लिए सभी धर्म पूज्य हैं।
2. शिवा चाहता है कि देश में हिन्दू नहीं, बल्कि सच्चे स्वराज्य की स्थापना हो।
3. शीर्षक शिवा जी।

7 हम बीमार ही क्यों हों?

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iv) पाँच **(ख)** (i) आकाश
(ग) (iii) सात गुना **(घ)** (i) लाल रक्त कण

2. **(क)** वजन के 100 भागों में से 70
(ख) एक, दो **(ग)** बुद्धि

3. **(क)** 1. आकाश, 2. अग्नि, 3. जल 4. वायु एवं 5. पृथ्वी

(ख) 'आरोग्य सम्राट्' आकाश तत्व को कहा गया है।

(ग) हमें सन्तुलित, प्राकृतिक आहार लेना चाहिए। गेहूँ, दाल, घी, तेल आदि का एक हिस्सा एवं चार हिस्सा दूध, फल और हरी सब्जियाँ आदि संतुलित आहार में होना चाहिए।

(घ) आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पाँच तत्वों की सन्तुलित मात्रा शरीर को स्वस्थ

रखती है। साथ ही सन्तुलित प्राकृतिक आहार लिया जाना चाहिए। अत: शरीर को स्वस्थ रखने में इन चीजों को शामिल करना चाहिए।

4. **(क)** जल को जीवन इसलिए कहा गया है क्योंकि जीवन के लिए जल तत्व अत्यन्त आवश्यक है। हमारे शरीर के वजन के 100 में से 70 भाग केवल जल है। जल पसीने के रूप में फेफड़ों से, वाष्प के रूप में पेट से, मल–मूत्र के रूप में शरीर की गन्दगी को बाहर निकालता है। जल से पाचन क्रिया ठीक रहती है।

(ख) सन्तुलित आहार के अन्तर्गत एक हिस्सा गेहूँ, दाल, घी, तेल आदि होना और इसके अतिरिक्त चार हिस्सा दूध, फल, हरी सब्जियाँ आदि का होना अनिवार्य है। सन्तुलित आहार में पृथ्वी तत्व का सामंजस्य अनिवार्य है। भोजन में शामिल सभी वस्तुएँ जो खाने और पीने योग्य हैं, वे सभी पृथ्वी तत्व में शामिल हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार आवश्यक है।

(ग) सूर्य हमें प्रकाश और ताप ही नहीं देता बल्कि वह हमें बुद्धि और लम्बी आयु भी प्रदान करता है। सूर्य की प्रात:कालीन किरणों से हमें विटामिन 'डी' मिलता है जिससे लाल रक्त कण उत्पन्न होते हैं, जिससे हमारी जीवन शक्ति बढ़ती है। सूर्य से प्राप्त गर्मी से पृथ्वी तत्व, अन्न, फल, जल, सब्जियाँ आदि की प्राप्ति होती है, जिससे हमारा जीवन विकसित होता है। सूर्य को हमारे ही देश में नहीं अपितु सभी जगहों में पूजते हैं। सूर्य से जीवन संरक्षित होता है।

(घ) पृथ्वी हमें जन्म देती है, वह हमें धारण करती है। सन्तुलित और प्राकृतिक आहार पृथ्वी की देन है, यह हमारा पोषण करने वाली और अन्त में अपनी ही गोद में विश्राम देने वाली है। जिस प्रकार मछली जल के बिना और पक्षी आकाश के बिना नहीं रह सकते उसी प्रकार हम पृथ्वी के बिना नहीं रह सकते। अत: पृथ्वी को हमारी माता कहा गया है।

5. **(क)** यदि पृथ्वी पर जल की मात्रा बिल्कुल कम हो जाए तो प्राणियों का जीवन असम्भव हो जाएगा। जल ही जीवन है अर्थात शरीर में सबसे अधिक मात्रा जल की है। जल हमारे भोजन का अनिवार्य तत्व है। इसके सहयोग से खून शरीर के अति सूक्ष्म अवयवों का पोषण करता है। जल ही शरीर की गन्दगी को बाहर निकालता है। अत: शुद्ध जल की प्राप्ति से ही जीवन सम्भव है।

(ख) यदि हमें सब्जियाँ न मिलें तो सन्तुलित आहार की पूर्ति फल, दूध और जल आदि अन्य चीजों से पूरी करेंगे। साथ ही सूर्योदय से पहले खुले मैदान में स्वच्छ वायु सेवन से अन्य आवश्यक विटामिनों की पूर्ति कर सकेंगे।

(ग) शरीर में जल की मात्रा कम हो जाने पर इसकी पूर्ति के लिए ठण्डे जल से स्नान करेंगे। रसदार फलों और सब्जियों का उपयोग करेंगे। नींबू, नारियल, ओआरएस, सूप और दूध का सेवन बढ़ा देंगे। इस तरह धीरे-धीरे जल की कमी की पूर्ति कर सकते हैं।

6. **(क)** यदि हमें पृथ्वी के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह पर जाना पड़े तो हम अपने साथ वे सभी वस्तुएँ ले जाना चाहेंगे जो हमारे जीवन को बनाए रखने में सहायक हो सकें। जैसे— जल, वायु तथा खाद्य वस्तुएँ आदि।

(ख) यदि हमें पाँच तत्वों में से मात्र दो तत्व लेने पड़े तो हम जल और पृथ्वी तत्व को लेना चाहेंगे क्योंकि पृथ्वी तत्व से अन्न, फल, दूध एवं सब्जियाँ आदि प्राप्त हो जायेंगी। जीवन की प्रक्रिया चल सकेगी तथा जल तत्व हमारे शरीर में जल की पूर्ति करेगा।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से अपनी कक्षा में शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. सुरक्षा, वायुमंडल, साँस, निर्मल, भक्ति।
3. लिखावट, सजावट, दिखाई, सिलाई।
4. आकाश— नभ, व्योम, (2) सूर्य—सूरज, भानु, (3) पृथ्वी— धरती, वसुन्धरा, (4) अग्नि— आग, अनल, (5) नदी— सरिता, तटिनी।
5.

शब्द	विलोम शब्द
लाभ	हानि
स्वस्थ	अस्वस्थ
शुद्ध	अशुद्ध
सम	विषम
ऊपर	नीचे
प्रसन्न	अप्रसन्न

6. • प्राचीन—भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन है।
• भोजन—सबको संतुलित भोजन करना चाहिए।
• संयम—नियम-संयम से चलो सारे काम स्वयं बन जाएँगे।
• सदाचार—बालक में सदाचार का गुण होना अनिवार्य है।
• पवित्र—गंगा एक पवित्र नदी है।

प्रायोजना कार्य

1. स्वस्थ रहने के लिए निम्नलिखित बातों को अपनाना चाहिए—
(i) नियमित व्यायाम करें।
(ii) संतुलित आहार लें।
(iii) नियमित रूप से साफ-सफाई रखें।
(iv) खाने के बाद न तुरंत सोएँ और न तुरंत उठें।
(v) प्रतिदिन अपने दाँतों की सफाई करें।
(vi) शुद्ध और सुरक्षित पानी पिएँ।
(vii) अधिक-से-अधिक प्रकृति के साथ जुड़ें।

2. छात्र स्वयं लिखें।

3. सूर्य नमस्कार की विभिन्न मुद्राएँ—
(i) प्रणाम आसन (ii) हस्त उत्तानासन
(iii) हस्तपाद आसन (iv) अश्व संचालन आसन
(v) दंडासन (vi) अष्टांग नमस्कार
(vii) भुजंग आसन (viii) पर्वत आसन
(ix) अश्व संचालन आसन
(x) हस्तपाद आसन (xi) हस्तउत्तान आसन
(xii) ताड़ासन

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (स), **4.** (ब), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. आकाश **2.** अमृत
3. लाल रक्त कण **4.** निर्जीव
5. पेट

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (ङ), **4.** (ख), **5.** (क)।

8 संगीत शिरोमणि स्वामी हरिदास

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) तानसेन **(ख)** (i) दीपक राग

2. **(क)** स्वामी हरिदास
(ख) संगीत शिरोमणि
(ग) मेघ मल्हार
(घ) राजमहल

3. **(क)** सम्राट अकबर ने तानसेन से।
(ख) तानसेन ने अपनी गुरु बहन रूपा से।
(ग) स्वामी हरिदास ने अपने शिष्य तानसेन से।

4. **(क)** सम्राट अकबर हिन्दुस्तान की पवित्र जमीन को सलाम करते हैं क्योंकि इसका दुनिया में कोई जवाब नहीं है। यहाँ की कला, संगीत एवं यहाँ की मीठी-मीठी बोलियों को यहाँ के नृत्य भावों को समझना सौभाग्य की बात है।

(ख) दीपक राग के गायन से तन में गर्मी बहुत बढ़ जाती है। इस राग को गाने का मतलब है सीधा मृत्यु को निमन्त्रण देना। इस दीपक राग के गाने से पहले मेघ मल्हार गीत गाए जाने का प्रबन्ध कर लेना चाहिए। जब दीपक राग गायक के शरीर में आग पैदा करने लगे, तब मेघ मल्हार राग गाकर गायक के प्राणों की रक्षा की जा सकती है।

(ग) स्वामी हरिदास ने संगीत की शिक्षा को 'समाज' इसलिए कहते थे क्योंकि उनके संगीत की मिठास से सभी लोग प्रभावित हो उठते थे। वे स्वयं अपने स्वार्थ के लिए नहीं, अपनी प्रसिद्धि और सम्मान के लिए नहीं अपितु संसार के स्वामी को रिझाने के लिए गाते थे। अत: उन्होंने संगीत की शिक्षा को 'समाज' कहा है।

(घ) दीपक राग सुनने के पीछे सम्राट् का भाव यह था कि उन्हें तानसेन के साथ ही उसके गुरु स्वामी हरिदास से मेघ मल्हार सुनने का मौका मिल जाएगा परन्तु ऐसा नहीं हो सका। स्वामी हरिदास ने अपने संगीत को ब्रज बिहारी कृष्ण को समर्पित कर दिया था। वे कृष्ण की भक्ति में ही गीत गाते थे। किसी राजदरबार में स्वार्थ या लोभ के कारण गीत नहीं गाते थे।

(ङ) तानसेन और हरिदास के गायन में मुख्य अंतर यह था कि तानसेन अपना गीत हिन्दुस्तान के शहंशाह को खुश करने के लिए गाते थे जिससे उसके संगीत में पराधीनता, परवशता आ जाती थी जबकि स्वामी हरिदास जी, संसार के स्वामी को रिझाने के लिए गाते थे अर्थात् वे अपना गीत गाने के लिए किसी के अधीन नहीं थे।

5. (क) तानसेन ने अपने गुरु को अंतर्यामी इसलिए कहा क्योंकि तानसेन को गुरुदेव स्वामी हरिदास ने बहुत उदास देखकर उसका कारण पूछा कि तुम दु:खी क्यों प्रतीत हो रहे हो? इसका उत्तर देते हुए तानसेन ने अपने गुरु से निवेदन किया कि हे गुरुदेव, आप तो अन्तर्यामी हो। ऐसा कहते हुए तानसेन ने स्पष्ट किया कि सम्राट् अकबर दीपक राग सुनना चाहते हैं, वह भी आज ही रात को। मुझे बताइए मेघ मल्हार का प्रबन्ध किए बिना दीपक राग कैसे सुनाया जा सकता है। इस चिन्ता को आपने समझ लिया है।

(ख) अकबर तानसेन से दीपक राग इसलिए सुनना चाहते थे क्योंकि उन्हें स्वामी हरिदास जी का मेघ मल्हार सुनने का मौका मिलेगा, किन्तु बीच में रूपा के आ जाने से वे मेघ मल्हार सुनने से वंचित रह गए। अत: स्वामी हरिदास की गायकी सुनने से वंचित रह जाने के कारण अकबर ने स्वयं को बदकिस्मत कहा।

(ग) संगीत सुनने गए सेवक वेषधारी सम्राट अकबर और तानसेन का रूप उनके हाव-भावों से छिप न सका और हरिदास ने उन्हें पहचान लिया, तब स्वामी हरिदास के चरण स्पर्श करते हुए अकबर ने कहा कि आपके संगीत को सुनने का मौका किसी अन्य तरीके से मिलना असम्भव था। आज अपने इस रूप में तानसेन और उसके सेवक बने अकबर ने आपका संगीत सुन लिया। अत: निर्मल मन द्वारा सुनाए गए स्वच्छंद संगीत को सुनकर अकबर ने संगीत को 'जन्नत का संगीत' कहा।

6. (क) यदि निपुण गायिका रूपा तानसेन की मदद नहीं करती और राजहठ के चलते, तानसेन दीपक राग गाता तो उस राग की सिद्धि पर तानसेन के शरीर में अग्नि जल उठती और उसके प्राणों पर संकट आ पड़ता और हो सकता है दीपक राग की महिमा के मुताबिक तानसेन को जान से हाथ भी धोना पड़ जाता।

(ख) तानसेन के स्थान पर यदि मैं होता तो प्राणों पर संकट के बाद भी मैं सम्राट् की आज्ञा का पालन करता क्योंकि सम्राट की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य होता। इतने समय तक राजभवन में नवरत्न के पद पर रहते हुए परीक्षा की घड़ी आने पर भला मैं किस प्रकार पीछे हट सकता था।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें और अपनी पुस्तिका में लिखें।

2. अन्तर्यामी, निमंत्रण, प्रतीक्षा, सम्मान

3.

विशेषण	विशेष्य
निपुण	राधिका
अच्छा	भाग्य
सम्राट	अकबर
नव	रत्न

4. उप + स्थित = उपस्थित
उप + करण = उपकरण
उप + लब्ध = उपलब्ध
उप + वास = उपवास

5. **संगीत**— मध्यप्रदेश को <u>संगीत</u> स्थली के रूप में जाना जाता है।
विधाता— <u>विधाता</u> द्वारा बनाए गए नियम का सबको पालन करना पड़ता है।
दीवाना—हरिदास के संगीत ने सभी श्रोताओं को प्रभु का <u>दीवाना</u> बना दिया था।
प्रभात— मनोहर <u>प्रभात</u> बेला में उठकर योग करता है।

6. (क) तो इसमें भय कैसा? दीपक राग तो तुम्हें आता है। सुना देना। चिन्ता की क्या बात है?
(ख) दीपक राग तो मुझे आता है, गुरुदेव! आपने ही मल्हार की छत्रछाया में मुझे इस राग का अभ्यास कराया है। अगर मल्हार का प्रबन्ध किए बिना दीपक राग सुनाया तो मैं स्वयं भस्म हो जाऊँगा।

प्रायोजना कार्य

एक नगर में भीषण अकाल पड़ा। लोग सर्वत्र त्राहि-त्राहि कर रहे थे। प्रजा के दु:ख से राजा भी दु:खी थे। पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सभी की दृष्टि-आशा के साथ आसमान पर लगी थी, तभी राजा को गुप्तचरों से पता चला कि पास के गाँव

में एक संगीत सम्राट है, जो मेघ मल्हार संगीत से वर्षा करा सकता है। राजा ने वहाँ पहुँचकर मेघ राग गाने की विनती की। मेघराग से चारों ओर भरपूर वर्षा हुई। खेतों में फसलें लहलहाने लगीं। नगर में फिर से शांति का वातावरण छा गया और प्रजा खुश हो गई।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (स), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (स), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. दीपक राग **2.** प्रीति
3. सम्राट अकबर **4.** प्राण न्योछावर
5. स्वामी हरिदास

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

9 पद और दोहे

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) प्रेम की बेल **(ख)** (ii) कबीर ने **(ग)** (iii) तरवारि।

2. **(क)** कानि **(ख)** छाछ
(ग) साहब **(घ)** प्रकृति

3. **(क)** मीराबाई ने श्रीकृष्ण की पति रूप में उपासना की है

(ख) कबीर ने जिन दो बातों की सीख दी है वे हैं—पहली साहब (ईश्वर) की वन्दना करना और दूसरी भूखे को भीख (भिक्षा) देना।

(ग) जीवन का कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि क्षण भर में ही मृत्यु हो सकती है। अत: कल का काम आज ही कर लेना चाहिए।

(घ) रहीम ने उत्तम प्रकृति का महत्व चन्दन के पेड़ का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया है कि शीतलता देने वाले चन्दन के वृक्ष पर अनेक सर्प लिपटे रहते हैं, फिर भी उस पर साँपों के जहर का प्रभाव नहीं होता है।

(ङ) सच्चे मित्र अपने मित्र का साथ विपत्ति के समय भी नहीं छोड़ता अर्थात् विषम परिस्थितियों में वह साथ रहता है। यही सच्चे मित्र की पहचान है।

4. **(क)** **भाव—** मीराबाई अपने पद के माध्यम से कहती हैं कि मैं भक्तों को देखकर प्रसन्न होती हूँ और संसार के रंग-ढंग को देखकर रोती हूँ अर्थात् दु:खी होती हूँ।

(ख) **भाव—** कबीरदास जी कहते हैं कि सच्चा पीर, संत वही है जो दूसरों की पीड़ा को समझे। जो दूसरों के दु:ख को नहीं जानता है, वे बेदर्द हैं, निष्ठुर हैं और काफिर हैं।

(ग) **भाव—** रहीम कहते हैं कि पहले एक काम पूरा करने की ओर ध्यान देना चाहिए। बहुत से काम एक साथ शुरू करने से कोई भी काम ढंग से नहीं हो पाता, वे सब अधूरे रह जाते हैं। एक ही काम को एक बार में किया जाना ठीक है। जैसे एक ही पेड़ की जड़ को अच्छी तरह सींचा जाए तो उसका तना, शाखाएँ, पत्ते, फल-फूल सब हरे-भरे रहते हैं।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. अश्रुओं, भक्त, जिसके, त्रिशूल, प्रलय, अब, कब, विपत्ति।

3. **(क)** असुर **(ख)** तनय **(ग)** लोभ **(घ)** अशिष्ट **(ङ)** पुरुष।

4. (i) 'मोर-मुकुट-मेरो' शब्दों में 'म' वर्ण की आवृति होना।
(ii) साधे, सब, सधै, सब, साधे, सब' शब्दों में 'स' वर्ण की आवृति होना।
(iii) सम्पति, बनत, बहु, रीत शब्दों में 'त' वर्ण की आवृति होना।
(iv) पर, पीर, काफिर, बेपीर शब्दों में 'प' और 'र' वर्ण की आवृति होना।

5.

शब्द	विलोम शब्द
पण्डित	मूर्ख
देव	दानव
प्रेम	घृणा
सुख	दुख

जल	थल
दिन	रात

6. पराजय, पराभव, पराक्रम, निरंजन, निवेश, निदान

7.

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
सजाना	आवट	सजावट
लिखना	आवट	लिखावट
बनाना	आवट	बनावट
टकराना	आहट	टकराहट
मुस्कराना	आहट	मुस्कराहट
चिल्लाना	आहट	चिल्लाहट

घबराना	आहट	घबराहट

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (द), **3.** (द), **4.** (अ), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. पति **2.** चूनरी
3. साँचे **4.** तरवारि
5. फूल

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

10 क्या ऐसा नहीं हो सकता?

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) टॉवेल **(ख)** (ii) पैर
2. **(क)** बिस्तर **(ख)** करीने
   (ग) धुंध **(घ)** समन्दर
3. **(क)** धुंध से लेखक का यह अभिप्राय है कि प्रत्येक मनुष्य के चेहरे पर अभावों के अन्धकार की छाया छाई हुई है अर्थात् व्यक्ति की जर्जर व्यवस्था को उसके चेहरे के हाव-भाव से सहज पहचाना जा सकता है।
   (ख) मित्र अपने फटे बिस्तर को उजली चादर से ढककर छिपाता है।
   (ग) अव्यवस्थाओं के होते हुए भी मित्र लेखक से रुकने का आग्रह इसलिए करता है क्योंकि वह यह दिखाना चाहता है कि लेखक के आने पर मित्र को कोई आपत्ति नहीं है जबकि लेखक के आने और रुकने से मित्र का कार्य बाधित होता है लेकिन वह इसे छुपाना चाहता है।
   (घ) लेखक अपने मित्र को राजनीति और साहित्य के बदले उसे अपने बाल-बच्चों से सम्बन्धित, घर और गृहस्थी की बातें करने की सलाह देता है।
4. **(क)** लेखक के लिए मित्र घर में चीजों के न होने पर उन्हें छिपाकर और लेकर आता है। इन चीजों को किसी से उधार भी लेकर आता है। फटे बिस्तर को नई चादर से ढक देता है और पड़ोसी से स्वच्छ आईना लाकर रख देता है। भोजन कर लेने पर बच्चे से पान मँगाकर रख देता है। राजनीति और पत्र-पत्रिकाओं के साहित्य की बातों में उलझा देता है। बिखरी पुस्तकों को करीने से लगा देता है। इस तरह की अनेक सुविधाओं को जुटाता है।
   (ख) लेखक को मित्र के चेहरे पर निश्चिन्तता का भाव इसलिए दिखाई नहीं दिया, क्योंकि वह वास्तविकता को छिपाता है जबकि उसके घर में गृहस्थी की चीजों का अभाव है, जिनका इन्तजाम वह लेखक से छिपकर करता है। कहीं पड़ौस से दर्पण और तौलिया लाकर रखता है। कहीं फटे बिस्तर को नई चादर से छिपाता है। बच्चे को भेजकर लेखक के लिए पान मँगाकर रखता है। खूँटी पर बेतरतीब रखे कपड़ों को और बिखरी पुस्तकों को करीने से लगाता है। घर-गृहस्थी की बातें न करके राजनीति और साहित्य की बातों में उलझाने का प्रयास करता है।
   (ग) लेखक अपने मित्र से अपेक्षा करता है कि वह अपने फटे बिस्तर को वैसे ही बना रहने दे। टूटे हत्थे वाली कुर्सी पर ही लेखक को बैठने दे। धुँधले दर्पण और फटे गन्दे तौलिए को ही लेखक को नहाने के बाद, बदन पोंछने के लिए दे। वह बनावटी बातों को छोड़कर उससे

अपने घर-गृहस्थी की बातें करे। वह लेखक से समस्याओं के समन्दर से निकलने का मार्ग सुझाए क्योंकि जो उसका हाल है वही उसके साथी मित्र का भी है।

(घ) लेखक मित्र को निम्नलिखित रूप से व्यवहार करने की सलाह देता है—

- जिस फटे तौलिए से अपना शरीर पौंछते हो, उसी से मुझे भी अपना शरीर पोंछने दो। जिस दर्पण में तुम अपना चेहरा देखते हो उसी से मुझे भी देखने दो।
- हम दोनों मित्र ठीक वैसे ही मिलें जैसे हम हैं। बनावटी दिखने का प्रयत्न बन्द करें।
- जैसी सूखी रोटी तुम खाते हो, वैसी ही मुझे खिलाओ। राजनीति और साहित्य में मत उलझाओ।

5. **(क)** अपने लिए मुझे कष्ट उठाते हुए व्यवस्था जुटाने में लगे मित्र को देखकर मेरे मन में यह विचार आएँगे कि मेरा मित्र वही रूखी-सूखी रोटी खिलाए, जो वह स्वयं खाता है। वह मुझसे अपनी हकीकत न छिपाए, बल्कि उसे मेरे समक्ष हूबहू रखे क्योंकि हो सकता है समस्याओं से उभरने का कोई विकल्प निकले। वह मेरे साथ बैठने का समय दे, व्यवस्थाओं को जुटाने में न लगे।

(ख) मित्र अपने फटे बिस्तर को चादर से छिपाने का प्रयास इसलिए करता है ताकि उसकी वास्तविक स्थिति का पता लेखक को न हो सके। मित्र की अभावों भरी गृहस्थी का आभास लेखक को होगा, तो उसे कष्ट होगा। हो सकता है मित्र वास्तविकता को जान ले तो कहीं उसे भूल न जाए और जरूरत पड़ने पर वह उसका साथ न दे।

6. **(क)** अगर अचानक मेरे घर मेहमान आ जाते हैं और उस समय मेरे माता-पिता नहीं हैं तो मैं ऐसी दशा में जो भी कुछ व्यवस्था सरलता से कर सकता हूँ, करूँगा। बैठने के लिए कहूँगा। शुद्ध ताजा पानी पीने को दूँगा, फिर प्रयास करूँगा कि मैं अपने माता-पिता को उनके आगमन की सूचना दूँगा और माता-पिता के आने तक उन्हें रोकने का प्रयास करूँगा। उनका उचित आतिथ्य करूँगा।

(ख) मेरी दृष्टि में उधार लेकर अथवा माँगकर व्यवस्था जुटाना बिल्कुल भी उचित नहीं है। अपनी परिस्थिति के अनुसार जो भी सम्भव है, उसी से अतिथि का सत्कार करना मैं उचित समझता हूँ। आडम्बर करते हुए सच्चाई को छिपाना स्वयं अपने लिए मुसीबत उत्पन्न करना है क्योंकि इस तरह छुपकर व्यवस्था करने पर हमारे अपने चाहकर भी हमारी मदद नहीं कर सकेंगे।

(ग) किसी के घर जाने पर हम उसके फटे बिस्तर पर ध्यान नहीं देंगे। स्नेह की पवित्रता मेरे लिए महत्वपूर्ण है और मैं उसी को प्राथमिकता दूँगा।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं शुद्ध उच्चारण करने और लिखने का अभ्यास करें।

2. राजनीति, अवकाश, विश्वास, दृष्टि।

3. (क) बालक स्कूल जा रहे हैं।
(ख) गायें चर रही हैं।
(ग) नदियों में बाढ़ आई है।
(घ) वे पुस्तक पढ़ रहे हैं।

4. **(क)** पलकों पर बैठाना— हमारे गाँव के लोग मेहमानों को पलकों पर बैठाते हैं।
(ख) कलेजे पर साँप लोटना— राकेश की नौकरी लगने पर, पड़ोसी के कलेजे पर साँप लोट गया।
(ग) आम के आम गुठलियों के दाम— महाकालेश्वर के मेले में दुकान लगायी और प्रभु के दर्शन किए। मेरे लिए तो आम के आम गुठलियों के दाम वाली बात हो गई।
(घ) कंगाली में आटा गीला— रमेश ने बड़ी मुश्किल से साइकिल खरीदी और वह भी चोरी हो गई। इसे कहते हैं कंगाली में आटा गीला होना।

5. **(क)** छिपाना— सकर्मक।
(ख) रहना— अकर्मक।
(ग) रोना— अकर्मक।
(घ) उड़ना— अकर्मक।

6. 'पत्र लेखन' खण्ड में देखकर छात्र स्वयं लिखें।

प्रायोजना कार्य

1. तैते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सोर—
अर्थ— सामर्थ्य के अनुकूल खर्च करना।

2. हम अपने घर आए मेहमानों का स्वागत बड़ी तन्मयता और खुशी के साथ करेंगे। उन्हें घर पर

पहले बैठने के लिए कुर्सी डालेंगे या चारपाई बिछाएँगे फिर उन्हें ठण्डा पानी, शरबत देंगे या चाय पिलाएँगे, उनके साथ बैठकर बातचीत करेंगे।
(नोट— छात्र अपने अनुसार अपने मन के भाव व्यक्त करें।)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (द), **3.** (स), **4.** (ब), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. मेहमान **2.** पान
3. दो घड़ी साथ **4.** निश्चिंतता
5. निर्निमेष

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (ग), **3.** (ख), **4.** (क)।

11 झाँसी की रानी

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) बरछी, ढाल
(ख) (iii) शस्त्र कला
(ग) (iii) काना और मुंदरा
(घ) (ii) लेफ्टिनेंट वॉकर
(ङ) (ii) तेईस वर्ष

2. **(क)** गाथाएँ **(ख)** वैभव
(ग) शत्रु **(घ)** आजादी

3. **(क)** लक्ष्मीबाई ने बरछी, ढाल, कृपाण और कटारी अपने बचपन में ही चलाना सीख लिया था।

(ख) झाँसी के राजा नि:सन्तान ही मर गए थे। अंग्रेजों ने ऐसा नियम बनाया था कि लावारिस राज्य पर सरकार का शासन होगा। यह नियम ब्रिटिश शासकों की राज्य हड़ नीति थी। डलहौजी इस कारण प्रसन्न हुआ कि अब झाँसी का राज्य भी ब्रिटिश शासन में शामिल हो जाएगा।

(ग) अंग्रेजों ने राज्य हड़प नीति के तहत भारतीय राज्यों को अपने अधिकार में कर लिया। भारतीय राज्यों के बहुत से शासक नि:सन्तान थे और उन्हें पुत्र गोद लेकर राज्य का वारिस बनाने का कोई अधिकार नहीं था।

(घ) 'हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता नारी थी' से कवयित्री का आशय है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने स्वतंत्रता के लिए खुद को बलिदान कर दिया। उन्होंने स्वतंत्रता की नारी के रूप में जन्म लिया था। उन्होंने हमें आजादी का मार्ग दिखाने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। वे स्वतंत्रता की साक्षात् देवी थीं जिन्होंने हम भारतीयों को वतन के लिए बलिदान होना सिखा दिया था।

(ङ) 'झाँसी की रानी' कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम अपनी मातृभूमि की आजादी की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर भी करें। अन्याय का विरोध करना सीखें। साथ ही, हमारे अन्दर राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल बनाएँ।

4. **(क)** **भावार्थ—** वीरता की साक्षात मूर्ति लक्ष्मीबाई की वैभव से भरी झाँसी में सगाई हो गई। उनका विवाह राजा गंगाधर राव के साथ हुआ और वे झाँसी में रानी बनकर आ गईं।

(ख) यहाँ कवयित्री सुभद्रा जी कहती हैं कि उन भारतीय राजाओं की क्या बात करें जिन्होंने अंग्रेजों के सामने घुटने टेक दिए। आओ, झाँसी के युद्ध क्षेत्र में चलें, जहाँ लक्ष्मीबाई पुरुष बनकर वीर योद्धा के रूप में खड़ी हैं।

(ग) कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान कहती हैं, जब रानी का घोड़ा नाले को पार करने में अड़ गया उसी समय पीछा करते अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें पुन: घेर लिया और दोनों ओर से वार पर वार होते चले गए। शेरनी-सी रानी घायल होकर गिर गईं, जिससे उन्हें वीरगति प्राप्त हुई।

(घ) रानी लक्ष्मीबाई स्वर्ग सिधार गईं। उन्हें अब चिता पर लिटा दिया गया। उनकी आत्मा का तेज आग के तेज में मिल गया क्योंकि वे उस तेज की सच्ची अधिकारी थीं अर्थात् रानी की चिता को आग लगा दी गई।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करें।

2. कीमत, फिरंगी, झाँसी, उदित, खूब, बुन्देले, शत्रु, मनुज।

3. तत्सम— कृपाण, चिन्ता, सौभाग्य, शोक, शत्रु।
तद्भव— बूढ़ा, मुँह, पिता, सीख, मनुज।

4. **'सु' उपसर्ग वाले शब्द—**
सु + मति = सुमति
सु + लेख = सुलेख
सु + मुखी = सुमुखी।
'वि' उपसर्ग वाले शब्द—
वि + राट = विराट
वि + रूप = विरूप
वि + जय = विजय
'सम्' उपसर्ग वाले शब्द—
सम् + मुख = सम्मुख
सम् + वृद्धि = सम्वृद्धि
सम् + ऋद्धि = समृद्धि

5.
- **सिंहासन—** श्रीकृष्ण ने सुदामा को सिंहासन पर बैठाया।
- **गाथा—** रानी चेन्नम्मा की वीरता की गाथा सम्पूर्ण भारत गाता है।
- **मैदान—** युद्ध के मैदान में वीरों की पहचान होती है।
- **वीरगति—** स्वतन्त्रता के लिए अनेक वीरों ने वीरगति पाई।
- **स्वतंत्रता—** रानी लक्ष्मीबाई ने भारतीयों को स्वतंत्रता का मंत्र सिखाया।

6. (i) **स्वर्ग सिधारना—** मृत्यु प्राप्त करना।
प्रयोग— स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से युद्ध करते हुए अनेक वीर स्वर्ग सिधार गए।
(ii) **मुँह की खाना—** बुरी तरह पराजित होना।
प्रयोग— हल्दीघाटी के मैदान में राणा प्रताप की सेना के सामने मुगल सेना को मुँह की खानी पड़ी।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (अ), **3.** (स), **4.** (द), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. सत्तावन **2.** कानपुर
3. वीर शिवाजी **4.** वीरानी
5. तेईस

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

12 डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) ट्राम्बे में
(ख) (i) सन् 1941 में

2. **(क)** जे. एस. भाभा **(ख)** ग्रामोफोन

3. **(क)** भारत में अणु शक्ति का विकास प्रथम वैज्ञानिक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने किया।
(ख) डॉ. भाभा को विज्ञान में रुचि के अलावा गणित, संगीत, नृत्य एवं चित्रकला से भी भारी लगाव था।
(ग) डॉ. भाभा की एकमात्र इच्छा थी कि भारत विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़े।
(घ) चित्रकार ने डॉ. भाभा के बनाए चित्र को देखकर कहा कि यह बालक एक दिन महान कलाकार बनेगा।
(ङ) अणुशक्ति के रचनात्मक प्रयोग के लिए डॉ. भाभा के अनुरोध पर मुम्बई में सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट द्वारा 'टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेन्टल रिसर्च' नामक संस्था स्थापित की गई।

4. **(क)** डॉ. भाभा के बारे में कहा जाता है कि उन्हें बचपन में नींद नहीं आती थी। वे प्राय: रोते रहते थे। इससे पिता को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने डॉक्टर की सलाह ली लेकिन कोई समाधान न मिलने पर, परेशान होकर उन्होंने एक उपाय किया जो कारगर सिद्ध हुआ। डॉ. भाभा के सामने ग्रामोफोन बजाया जाने लगा। इससे उनका ध्यान बँट जाता और वे चुप हो जाते थे। इस प्रकार उनका संगीत के प्रति लगाव हो गया।
(ख) वर्ष 1954 में वे अणुशक्ति के निर्माणकारी उपयोग के सिलसिले में जिनेवा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। डॉ. भाभा अणुशक्ति से अणुबम बनाने के पक्ष में नहीं

थे। अणुबम से लाखों लोगों की जान चली जाती है इसलिए वे अणुशक्ति का प्रयोग शांतिपूर्ण एवं रचनात्मक कार्यों के लिए करना चाहते थे।

(ग) डॉ. भाभा की प्रारंभिक पढ़ाई मुंबई के कैथेड्रल और जान कैनन हाईस्कूल में हुई। मुंबई विश्वविद्यालय से ई.एम.सी. की परीक्षा पास करके आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड चले गए। वहाँ इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करके गणित और भौतिक विज्ञान की शिक्षा के लिए उन्होंने कैम्ब्रिज केयस कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉस्मिक किरणों के अनुसंधान के फलस्वरूप उन्हें लन्दन की रॉयल सोसाइटी का फैलो चुना गया। उन्हें विभिन्न विश्वविद्यालयों से पी.एच.डी. तथा डी.एस.सी. की उपाधियाँ प्राप्त हुईं।

(घ) 24 जनवरी, 1966 को भारतीय विमान सेवा का कंचनजंघा नामक जेट विमान मुम्बई से जिनेवा जा रहा था। डॉ. भाभा भी उसी विमान से यात्रा कर रहे थे। जिनेवा के पास एक बहुत ऊँचे पहाड़ माउन्ट ब्लॉक से वह विमान टकराकर गिर गया। इस दुर्घटना में डॉ. भाभा की मृत्यु हो गई।

5. **(क)** परमाणु ऊर्जा का उपयोग विकास कार्यों के लिए वरदानस्वरूप है। कृषि, चिकित्सा उद्योग आदि क्षेत्रों में इसका उपयोग होना चाहिए। नहरों, बाँधों तथा खानों के निर्माण के लिए इसका उपयोग होना चाहिए। विद्युत परमाणु रिएक्टरों के माध्यम से विद्युत उत्पादन किया जाना चाहिए। नाभिकीय रियेक्टर से प्राप्त उष्मा पानी को गर्म-करके भाप बनाने के काम आती है, जिसका बिजली उत्पन्न करने में उपयोग किया जाता है।

(ख) किसी कार्य से ध्यान बँटाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं—

(i) प्राकृतिक रूप से आकर्षक स्थलों पर भ्रमण किया जा सकता है।

(ii) संगीत सुनने का कार्य किया जा सकता है

(iii) रचनात्मक कार्य किए जा सकते हैं, जैसे— चित्रकारी आदि।

(iv) हास्य-व्यंग्य कार्यक्रमों को देखा जा सकता है।

(v) अच्छा साहित्य पढ़ा जा सकता है।

(ग) विमान दुर्घटनाएँ इंजन में खराबी आने से हो सकती हैं। परन्तु कभी-कभी पर्वतीय क्षेत्रों के मध्य से या ऊपर से गुजरने पर उन स्थलों की बनावट व ऊँचाई का सही ज्ञान न होने पर दुर्घटना होती है। आकाश में उड़ते पक्षियों से टकरा जाने पर विमान असन्तुलित होकर गिर सकते हैं या फिर इंजन में आग लग जाती है। पेट्रोल टैंक के अचानक फट जाने से भी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। तेज तूफान आने पर कुहरा या धुंध छाये रहने से दृष्टिबाधित होने की स्थिति में विमान दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। रडार यंत्र की खराबी से विमान सम्पर्क टूट जाने पर विमान भटककर दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं।

6. **(क)** यदि 15 वर्ष की आयु में ही डॉ. होमी जहाँगीर भाभा को यूरोप में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल जाता तो वे थोड़े समय में ही विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करके भारत लौट आते और अपनी प्रशंसनीय सेवाओं को देश को समर्पित करते। देश विविध क्षेत्रों में प्रगति करता और विश्व में अपने विकास से एक विशेष स्थान बना पाता।

(ख) यदि डॉ.भाभा का दुर्घटना में निधन नहीं होता तो अणुशक्ति द्वारा किए गए उनके शान्तिपूर्ण प्रयासों का विश्व पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता। अणुशक्ति का विनाशकारी रूप (बम) के निर्माण में प्रयोग नहीं किया जाता। देशों में अपनी सुरक्षा के नाम पर बनने वाले विध्वंसक यंत्र नहीं बनते। विश्व में पर्यावरणीय समस्याओं का कुछ समाधान निकाला गया होता। पानी हवा आदि स्वच्छ रहते। अनेक रोगों से मुक्ति मिलती। विश्व के देश अपेक्षाकृत अधिक विकसित होते, सुख और शान्ति बढ़ती। भारत विकास के क्षेत्र में काफी समृद्ध होता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. अणु-शक्ति, पढ़े-लिखे, संगीत-प्रेमी, साथ-साथ

3.
- संसार— विश्व, दुनिया।
- उपवन— बाग, बगीचा।
- दीप— दीया, दीपक।
- मार्ग— पथ, राह।

4.

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
प्रभु	त्व	प्रभुत्व
पशु	त्व	पशुत्व
नारी	त्व	नारीत्व
पुष्प	इत	पुष्पित
सम्मान	इत	सम्मानित
प्रभाव	इत	प्रभावित
दर्शन	ईय	दर्शनीय
राष्ट्र	ईय	राष्ट्रीय
भारत	ईय	भारतीय

5.

शब्द	मूल शब्द	नया शब्द
अ	शुभ	अशुभ
अ	ज्ञान	अज्ञान
अ	सभ्य	असभ्य
सु	मार्ग	सुमार्ग
सु	गंध	सुगंध
सु	संस्कृत	सुसंस्कृत
दुर्	जन	दुर्जन
दुर्	गति	दुर्गति
दुर्	गुण	दुर्गुण

6. गृह, क्षेत्र, लज्जा।

7. • **अणुशक्ति**– अमेरिका ने सर्वप्रथम अणुशक्ति का प्रयोग जापान में किया था।

• **संगीत-प्रेमी**– डॉ. अब्दुल कलाम बचपन से ही संगीत-प्रेमी थे।

• **वैज्ञानिक**– चन्द्रशेखर वेंकट रमण भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे।

• **सपूत**– डॉ. भाभा भारत माता के सच्चे सपूत थे।

8. **(क)** 'जाना' **मुख्य क्रिया**, 'है' सहायक **क्रिया**।

(ख) 'पढ़ना' **मुख्य क्रिया**, 'है' सहायक **क्रिया**।

(ग) 'लिखना' **मुख्य क्रिया**, 'है' सहायक **क्रिया**।

(घ) 'जाना' **मुख्य क्रिया**, था सहायक **क्रिया**।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. इंजीनियरिंग **2.** अणुबम

3. अध्यक्ष **4.** संगीत प्रेमी

5. अत्यन्त सरल, उदार

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** असत्य, **4.** सत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

13 बसन्त

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) वृक्ष काटकर

(ख) (ii) अमुआ पर

(ग) (i) कोयल **(घ)** (i) बसंत

2. **(क)** हरियाली **(ख)** जीवन

(ग) कुहू-कुहू **(घ)** स्वागत

3. **(क)** हरियाली बसन्त ऋतु लाती है।

(ख) बसन्त में चम्पा, चमेली और गेंदा के फूल खिलते हैं।

(ग) अब पहले की तरह बसन्त इसलिए नहीं आता है क्योंकि लोगों ने पेड़-पौधे और जंगल काट दिए हैं।

(घ) पूर्व की तरह बसन्त अब तभी आएगा जब चारों ओर बंजर पड़ी धरती पर लोग पेड़-पौधे लगाएँगे और फिर से हरियाली आएगी।

(ङ) बसन्त में चारों ओर मस्त हवा बहने लगती है। आसपास का वातावरण खुशबू से भर जाता है, हरियाली छा जाती है, तरह-तरह के फूल खिल उठते हैं। आम पर बौर आने लगते हैं। उनकी डालियों पर झूले पड़ जाते हैं। मोर-मोरनी नाचने लगते हैं। कोयल पत्तों के झुरमुट में कुहू-कुहू की धुन में गीत गाती है।

4. **(क)** कवि कहता है कि हे बसंत! जब तुम आते थे तो मतवाली हवा बहने लगती थी, उसमें पागल हुआ मन झूम उठता था। वन में मोर भी मोरनी

के साथ नाचने लगता था।

(ख) कवि के पूछने पर बसंत जवाब देता है कि मैं कहाँ पर आऊँ? क्योंकि मेरे ठहरने के हरे-भरे पेड़ तुमने काट दिए हैं, बताओ तो मैं अब कहाँ ठहरूँ?

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. **(क)** चमेली। **(ख)** मयूर।
   (ग) जंगल। **(घ)** उजाड़।
3. फूल— सुमन, कुसुम
   मयूर— मोर, केकी
   जंगल— वन, कानन
   पवन— हवा, वायु
   वृक्ष— पेड़, विटप
4. ● चम्पा चमेली।
   ● कुहू कुहू धुन आती थी।
   ● तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
   ● सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
5.

विशेषण	**विशेष्य**
मस्त	पवन
सुन्दर	फूल
काली	कोयल

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (द), **3.** (स), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. हरियाली **2.** अमुआ
3. मस्त **4.** जीवन
5. हरियाली

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (क), **4.** (ख)।

विविध प्रश्नावली–2

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) सरोजनी नायडू ने
   (ख) (iv) ट्रॉम्बे में
   (ग) (iii) थलचर
   (घ) (ii) आरोग्य सम्राट
2. **(क)** बुद्धिमत्ता **(ख)** दीपक
   (ग) पद्म भूषण **(घ)** भारत
   (ङ) मुझसा
3. **(क)** सूर्य की किरणें हमारे शरीर में विटामिन डी की वृद्धि करती हैं।
   (ख) मीराबाई ने अपने पति की निशानी बताई है कि वे अपने सिर पर मोर-मुकुट धारण करते हैं।
   (ग) बसन्त के स्वागत में कोयल गाती थी।
   (घ) वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला राग जो बादलों को आमन्त्रित करता है।
   (ङ) झाँसी की रानी की कहानी हमने बुन्देलखण्ड के हरबोलों के मुख से सुनी है।
4. **(क)** सम्राट अकबर स्वामी हरिदास के गायन को सुनने के लिए सेवक का वेष धारण करके उनके आश्रम पर पहुँचे। स्वामीजी का संगीत सुनकर भाव-विभोर हुए अकबर ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वामी जी आपका संगीत सचमुच ही 'जन्नत का संगीत' है।
   (ख) रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम छबीली था। वे अपने पिता की इकलौती सन्तान थी। वे कानपुर के नाना साहब के साथ ही पढ़ती थीं और खेल भी उनके साथ खेलती थीं। बरछी, ढाल, तलवार और कटारों से खेलना उनका प्रिय खेल था। वे बड़ी साहसी थीं। उन्होंने अपने बचपन में ही वीर शिवाजी की वीरता से भरी कहानियाँ सुनीं और जवानी याद थीं।
   (ग) कबीर ने अपने पुत्र कमाल को यह सीख दी कि केवल दो बातें सीख ले, पहली ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। दूसरी जो व्यक्ति दीन और भूखा हो, उसे भिक्षा देनी चाहिए। भूखे व्यक्ति को भोजन कराना बड़े पुण्य का काम है।
   (घ) रहीम के अनुसार विपत्ति रूपी कसौटी पर कसे जाने पर ही सच्चे मित्र की पहचान होती है। जिस तरह शुद्ध सोने की परख कसौटी पर घिसकर की जाती है, उसी तरह सच्चे मित्र की

पहचान भी उस समय होती है जब विपत्ति काल में वह अपने मित्र की सहायता करने को तत्पर रहता है।

5. **(क) भावार्थ—** भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में उन्होंने आँसू बहाते हुए, उनके प्रति प्रेम की बेल को बोया है और लगातार सींचा है। वह बेल अब फूलकर फैल चुकी है। उस पर अब तो आनन्द के फल लगने शुरू हो गए हैं।

(ख) भावार्थ—रानी लक्ष्मीबाई शत्रुओं से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गईं। जिस समय वह वीरगति को प्राप्त हुईं, उस समय उनकी उम्र मात्र तेईस वर्ष की थी। उन्होंने सचमुच मनुष्य के रूप में भारतीयों को अपने वतन के लिए मर मिटने हेतु सीख देने के लिए अवतार लिया था। बुन्देले हरबोले आज भी उसकी गौरव गाथा गाकर बताते हैं कि रानी लक्ष्मीबाई ने बड़ी बहादुरी से युद्ध किया था।

(ग) भावार्थ— बसन्त कवि को उत्तर देते हुए कहता है कि मैं कहाँ पर आऊँ, क्योंकि मेरे ठहरने के स्थान हरे-भरे पेड़-पौधे थे, उनको तुमने काट डाला है। बताओ तो मैं अब कहाँ ठहरूँ। हरियाली से परिपूर्ण जंगलों को तुमने उजाड़ दिया है। हरे-भरे वन ही मेरे निवास स्थान थे, उन्हें ही काटकर मेरा घर बरबाद कर तुमने वनों को आपस में बाँट लिया है। मेरे लिए तो रहने का स्थान छोड़ा ही नहीं है। अब मैं कहाँ आऊँ?

(घ) भावार्थ— रहीम जी कहते हैं कि विपरीत समय को देखकर किसी भी कार्य की सिद्धि न हो सकने की दशा में शान्तिपूर्वक बैठ जाना ही उचित है। ऐसे समय में व्यक्ति को अधीर नहीं होना चाहिए क्योंकि जब अच्छा समय आएगा, तो सारी बातें अपने आप ही बन जाती हैं।

6. **(क)** प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि पुड़िया में दूत द्वारा लाई गई मिट्टी उस स्थान की है, जहाँ के लोगों ने हमेशा मानवता की रक्षा की। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर स्वेच्छा से, प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इसलिए यह मिट्टी बहुत ही सम्मानित है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि संसार के लगभग हर मनुष्य के चेहरे से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके पास किसी-न-किसी वस्तु का अभाव है परन्तु हम लोग उस अभाव को छिपाने का ढोंग करते हैं। यह अभाव एक ऐसा धुँधलापन है जो मनुष्य की वास्तविकता को प्रकट करता है।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि हमारे शरीर की रचना पाँच भौतिक तत्वों से हुई है। ये पंचभूत पाँच तत्व कहलाते हैं—

1. पृथ्वी, 2. जल, 3. अग्नि, 4. आकाश, 5. समीर (वायु)।

इन पाँच भौतिक तत्वों को संतुलित रखने से ही इस पंचभूत शरीर को पूर्ण स्वस्थ रखा जा सकता है।

(घ) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि किसी राजा या शासन द्वारा राजदरबार में मिल जाने वाला सम्मान सदैव सुख देने वाला नहीं होता है। कभी-कभी इस प्राप्त किए गए सम्मान की परीक्षा देनी पड़ती है। उस परीक्षा में प्राण भी जा सकते हैं।

7. कविता के अनुसार बसन्त ऋतु में चम्पा, चमेली और गेंदे आदि के फूल खिलते हैं।

8. मिला हाँ, जैसे मैं तुम्हे देख रहा हूँ। स्वामी जी ने अपना हाथ उनके मस्तक पर रखा। स्वामी के वरदहस्त का स्पर्श होते ही नरेन्द्र को एक अलौकिक चेतना की अनुभूति हुई। गुरु ने शिष्य को, शिष्य ने गुरु को पहचाना। यह सत्संग बढ़ता ही गया, परिणाम यह हुआ कि पिता की मृत्यु के बाद नरेन्द्रनाथ ने संन्यास ले लिया। सारा विश्व ही उनके लिए उनका परिवार बन गया। अब वे स्वामी विवेकानन्द को गुरु का आदेश मिला जनसेवा ही प्रभु सेवा है।

1. नरेन्द्रनाथ के गुरु का नाम 'स्वामी रामकृष्ण परमहंस' था।
2. स्वामी जी ने गुरु से यह प्रश्न किया कि क्या उन्होंने ईश्वर को देखा है?
3. स्वामी विवेकानन्द को गुरु ने आदेश दिया कि 'जन सेवा ही प्रभु सेवा है।'
4. उचित शीर्षक—'स्वामी रामकृष्ण परमहंस और उनके शिष्य विवेकानंद' है।

9. छात्र व्याकरण भाग से 'पत्र लेखन' में देखें और स्वयं करें।

10. छात्र व्याकरण भाग में 'निबन्ध लेखन' देखें और स्वयं करें।

14 नारियल का बगीचा–केरल

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) केरल में **(ख)** (iii) कथकली
2. **(क)** ओणम **(ख)** चाय
   (ग) त्रिवेन्द्रम **(घ)** हिन्दी
   (ङ) शौकीन
3. **(क)** रामकृष्ण मेनन का वतन केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में था।
   (ख) लेखक को प्लेटफार्म पर खड़े सज्जन पर दया इसलिए आ गई क्योंकि एक पहलवाननुमा लड़का डिब्बे के दरवाजे में खड़ा होकर उसे डिब्बे में चढ़ने नहीं दे रहा था और गाड़ी चलने वाली थी। लेखक की पहल पर वह बेचारा प्लेटफार्म से डिब्बे में चढ़ सका।
   (ग) केरल के वनों में सागौन, शीशम, रबर और चन्दन के वृक्ष होते हैं। नारियल का पेड़ वहाँ के लोगों की प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
   (घ) केरलवासी नारियल को कल्पवृक्ष कहते हैं।
   (ङ) केरल के लोग गर्मी की अधिकता के कारण प्रायः ढीले–ढाले व सफेद रंग के कपड़े पहनते हैं। यहाँ के पुरुष लुंगी के अलावा कुछ नहीं पहनते तथा स्त्रियाँ धोती व ब्लाउज पहनती हैं।
   (च) कथकली नामक नृत्य कला में अनेक कथाओं को नृत्य में ढाल लिया जाता है। इसलिए इसे कथकली कहा जाता है।
4. **(क)** नारियल अमृततुल्य मीठा पानी प्रदान करता है। उसकी गिरी से साग–सब्जी और चटनी बनाई जाती है। उसके गोले से तेल निकाला जाता है जो भोजन के अतिरिक्त साबुन बनाने और सिर में डालने के काम आता है। इसके तने का उपयोग नाली बनाने में किया जाता है। उससे रस्सी, मोटे रस्से, चटाई, कूँची, पायदान बनाये जाते हैं। नारियल के छिलकों से कटोरे, प्याले, चमचे आदि बनाए जाते हैं। मकान बनाने के लिए नारियल की लकड़ी और मकान की छत के लिए पत्तियों का उपयोग किया जाता है।
   (ख) केरल की प्राकृतिक सुन्दरता अनोखी है। जिस तरह भारत के कश्मीर में प्राकृतिक सौंदर्य बिखरा पड़ा है, वैसे ही यहाँ के वन समूह में अनेक तरह के पेड़–पौधे पाये जाते हैं। इन पेड़–पौधों ने केरल को प्राकृतिक सुन्दरता दे दी है। रंग–बिरंगे फूलों और चन्दन आदि के वृक्षों की गंध चारों ओर बिखरती रहती है। इसलिए केरल को भारत का नन्दनवन कहते हैं।
   (ग) चावल केरल के लोगों का मुख्य भोजन है। वहाँ चावल से भिन्न–भिन्न वस्तुएँ बनाई जाती हैं। चावल के साथ रसम तथा सांभर भी बनता है। रसम एक तरह का मसालेदार पानी होता है और सांभर एक प्रकार की दाल होती है। वहाँ इडली और डोसा प्रिय खाद्य पदार्थ है, जो पूरे भारत में लोकप्रिय हैं।
   (घ) केरल का मुख्य त्योहार ओणम है। इस त्योहार पर घरों को सजाया जाता है। नौका और लक्ष्मी की पूजा की जाती है। अनेक मिठाइयाँ बनती हैं। नौका प्रतियोगिता होती है। नौकाओ में बैठे लोग मीठे स्वरों में गीत गाते हैं। दोनों किनारों पर दर्शकों की अपार भीड़ जमा होती है। इस अवसर पर हाथियों पर देवताओं की सवारी निकाली जाती है। संगीत और नृत्य के कार्यक्रम होते हैं।
   (ङ) केरल में कथकली नामक नृत्यकला विकसित हुई है। यह कथकली नृत्य आज पूरे भारत में प्रसिद्ध है। इस कला की यह विशेषता है कि इसमें अनेक कथाओं को नृत्य में ढाल लिया जाता है। इसलिए इसे कथकली कहा जाता है।
5. **(क)** जैसा देश वैसा वेष रामकृष्ण ने इसलिए कहा क्योंकि मनुष्य जिस स्थान और जलवायु वाले प्रदेश में रहता है, तो वह वहाँ के मौसम के अनुकूल अपने वस्त्रों का चुनाव करता है।
   (ख) केरल में सफेद कपड़े पहनते हैं क्योंकि वहाँ मौसम गर्म होता है। गर्मी के कारण लोग ढीले–ढाले कपड़ों का चुनाव करते हैं जिससे उन्हें गर्मी कम लगे। सफेद कपड़ा ऊष्मा को कम शोषित करता है जिससे लोगों को गर्मी का कम अहसास होता है।
   (ग) रामकृष्ण मेनन का जन्म त्रिवेन्द्रम में हुआ है और त्रिवेन्द्रम केरल की राजधानी है। इसलिए केरल को अपना वतन कहते हैं।
   (घ) पहलवाननुमा लड़का सज्जन को ट्रेन के अन्दर इसलिए नहीं आने दे रहा था क्योंकि वह

डिब्बे में भीड़ नहीं चाहता था। साथ ही वह दरवाजे पर खड़ा होकर बाहर का दृश्य देख रहा था और खुली हवा ले रहा था।

6. **(क)** यदि लेखक उस सज्जन को ट्रेन के अन्दर आने में मदद नहीं करते तो वे बेचारे उसी प्लेटफार्म पर रह गए होते और ट्रेन चली जाती। वे रातभर उसी प्लेटफार्म पर ही पड़े रहते। दूसरी गाड़ी जो उनके गन्तव्य तक ले जाती उसका इंतजार करते फिर उससे आते।

(ख) यदि केरल का मौसम कश्मीर जैसा होता, तो वहाँ का जन-जीवन अब की अपेक्षा बिल्कुल विपरीत होता। वहाँ का प्राकृतिक वातावरण भी कश्मीर जैसा ही होता। उनका खान-पान बिल्कुल भिन्न होता। वे ढीले-ढाले कपड़ों के स्थान पर गर्म कपड़े पहनते। वे रंगीन कपड़े पहनना पसन्द करते। उन लोगों के शरीर का रंग भी गोरा होता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. वृक्षों, गौर, आत्मीयता, हाँफते, पत्तियों, कार्यक्रम।
3. (i) सरलता, (ii) कठिनता, (iii) तरलता, (iv) समीपता, (v) मलिनता।
4.

शब्द	इक	नया शब्द
संस्कृत	इक	सांस्कृतिक
संसार	इक	सांसारिक
समाज	इक	सामाजिक
प्रकृति	इक	प्राकृतिक
धर्म	इक	धार्मिक

5.

तत्सम	तद्भव
पितृ	पिता
भगिनी	बहन
वानर	बंदर
रज्जु	रस्सी
नृत्य	नाच
चन्द्रमा	चाँद
रात्रि	रात

6. **(क)** मैंने **(ख)** मैं
(ग) मुझे **(घ)** मेरी
(ङ) वह

अनुभव विस्तार–

राज्य	भाषा	नृत्य	त्योहार
पंजाब	पंजाबी	भाँगड़ा	बैसाखी
असम	असमिया	बिहू	बिहू
गुजरात	गुजराती	गरबा	नवरात्रि
महाराष्ट्र	मराठी	कोली	गणेश चतुर्थी
मध्यप्रदेश	हिन्दी	जाबरा	लोकरंग महोत्सव

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (अ), **4.** (स), **5.** (द)

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. रेल **2.** चावल
3. प्लेटफार्म **4.** नृत्य, संगीत
5. कथकली

सुमेलन

1. (ग), **2.** (क), **3.** (घ), **4.** (ख)।

15 दस्तक

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) सोनू **(ख)** (ii) कोवलम।
2. **(क)** हरीबाबू **(ख)** समाज सेवा
3. **(क)** सोनू छत से गिर पड़ा और सदमे से वह अचेत हो गया था।

(ख) गरीबा बीमार हो गया था। मुलाकात न होने के कारण लेखक उससे मिलने उसके घर गया था।

(ग) सोनू के छत से गिरने पर उसे मूर्छित देखकर शीला स्वयं मूर्च्छित हो गई थी।

(घ) लेखक ने आठवर्षीय गणेशन के पैर में चुभी कील को निकाला और पट्टी बाँध दी। उसे अपनी पीठ पर लादकर ऑटो स्टैण्ड तक पहुँचाया। इस प्रकार उसने गणेशन की मदद की।

4. **(क)** शीला अपने पति से इसलिए नाराज रहती थी क्योंकि वे (पति) अपने अपने कामों की चिन्ता छोड़कर समाज के कामों में लगे रहते थे। लोगों की समस्याओं का समाधान करने हेतु (लेखक महोदय) लगे रहते थे। अपने घर और गृहस्थी से वे बेफिक्र हो जाते थे।

(ख) लेखक के पुत्र का नाम सोनू था जो एक बार छत से गिर पड़ा, मूर्च्छित हो गया। जिस किसी ने भी यह समाचार सुना, वही सहायता के लिए दौड़ पड़ा। शीला पुत्र को मूर्च्छित दशा में देखकर स्वयं मूर्च्छित हो गई थी। एकत्र हुए समाज के लोगों ने स्वयं की सहायता में खड़े पाना, शीला के व्यवहार में परिवर्तन का कारण था। इतनी संख्या में सहायकों और सहयोगियों को देखकर शीला के व्यवहार में परिवर्तन हो गया और समाज सेवा में उसका विश्वास बढ़ गया।

(ग) लेखक अपने घर-गृहस्थी के काम छोड़कर समाज सेवा में तत्पर रहते थे। एक दिन जब उनका बेटा सोनू छत से गिर पड़ा, अचेत हो गया, तो समाज के लोग ही उसे अस्पताल ले गए। लेखक की गैर-मौजूदगी में भी समाज के लोगों ने उनके पुत्र सोनू के लिए बहुत सहयोग दिया क्योंकि लेखक चौबीस घण्टे समाज की सेवा में लगे रहते थे, तो उस दिन समाज ने भी अपनी कृतज्ञता का परिचय दिया। अत: समाज ने वही किया, जैसा उन्होंने समाज के लिए किया था।

(घ) शीला स्वयं के साथ सामाजिक लोगों का बर्ताव देखकर उनसे प्रभावित हुई। अब वह भी मौहल्ले में जाकर महिलाओं के बीच समाज सेवा करने लगी। वह कहने लगी कि समाज की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। जो व्यक्ति समाज की उपेक्षा करके, अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट होता रहता है और जिसे समाज के कल्याण की चिन्ता नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों का प्रकृति स्वयं नियन्त्रण करती है। समय आने पर उन्हें दण्ड भी देती है।

5. लेखक की पत्नी शीला इस कथन के माध्यम से समाज में फैल रहे स्वार्थ और निजी जीवन में लिप्त लोगों की विचारधाराओं का खण्डन करती है। वह बताती है कि जो व्यक्ति सिर्फ अपने स्वार्थ में लगा रहता है और सदैव समाज की उपेक्षा करता रहता है, कभी न कभी उसके जीवन में ऐसा समय आ जाता है जब प्रकृति उन्हें खुद दण्ड देती है और उनके द्वारा किए गए कार्यों पर नियंत्रण स्वयं ही हो जाता है। अर्थात् जब ईश्वर हिसाब करता है तो दूध का दूध और पानी का पानी कर देता है।

6. **(क)** अपने पुत्र सोनू के छत से गिर जाने पर समाज के लोगों ने शीला को जो सहयोग दिया इससे उसके विचारों में परिवर्तन आ गया था। उसने समझ लिया कि सेवा का बदला सेवा के रूप में ही प्राप्त होता है। यह समझकर शीला मोहल्ले-मोहल्ले जाकर समाज-सेवा करने लगी।

(ख) छत की दुर्घटना से बचने के लिए मकान की छत की मुंडेर की ऊँचाई अधिक होनी चाहिए। छत के किनारे ग्रिल लगी होनी चाहिए। ध्यान दिलाते रहना चाहिए कि छत पर सावधानी बरतें, खेलते हुए बच्चे या युवक आपस में धक्का-मुक्की न करें। छत पर पतंग लूटना या उड़ानी नहीं चाहिए।

7. **(क)** यदि त्रिवेन्द्रम में लेखक की जगह मैं स्वयं होता तो गणेशन को ऑटो स्टैण्ड पर लाकर ऑटो से अस्पताल पहुँचाता और उसकी उचित मरहम-पट्टी करवाता और उसको घर पहुँचाकर ही, अपने काम को पूरा करता।

(ख) यदि मैं हरीबाबू की तरह ऊँचे पद पर होता तो अवश्य ही समाज कल्याण के कार्य करता। ऊँचे पद पर होने का अर्थ यह नहीं है कि मानवता को भुला दिया जाए और व्यक्ति अपने स्वार्थों की पूर्ति भर ही करता रहे। सरकारी अधिकारी भी जनता का सेवक होता है। जनता की किसी भी असुविधा का निवारण करना, उसकी सेवा करना ही उसका धर्म है। मैं रिश्वतखोरी और चापलूसी से बचकर रहता। गरीब और सरल व्यक्तियों की मदद करता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय के सहयोग से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. मनोरंजन, अन्तर्द्वन्द्व, हृदय, चंचल, दर्शन।

3.

शब्द	विलोम शब्द
उपस्थित	अनुपस्थित
कठिन	सरल
अमीर	गरीब
उन्नति	अवनति
कठोर	कोमल

4. ● संज्ञा— शीला, हरीबाबू, सोनू, गरीबा।
● सर्वनाम— वे, वह, मैं, उसने।
● क्रिया-चिल्लाना, बोलना, बड़बड़ाना, अघाना।

5. प्लास्टर, लाचार, सरेआम, फिल्मी, खाँसी, देहात, आरामखाना, मनुहार, दम, अमुक, कार, तमाम, गन्दी, माफ, मोहल्ला, लायक, बेताब, टेपरिकार्डर, हवाइयाँ, ऑटो स्टैण्ड, किलोमीटर, रूमाल, अस्पताल।

6. बुरा + आई = बुराई
लड़खड़ाना + आहट = लड़खड़ाहट
चतुर + आई = चतुराई
गुनगुनाना + आहट = गुनगुनाहट
भला + आई = भलाई
लड़ना + आई = लड़ाई
गुदगुदाना + आहट =गुदगुदाहट
चहचहाना + आहट = चहचहाहट

7. ● तिल का ताड़ बनाना— छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।
प्रयोग— आजकल लोग छोटी-छोटी बातों को तिल का ताड़ बनाकर कहते हैं।
● नाक में दम करना— परेशान कर देना
प्रयोग— छुट्टी वाले दिन बच्चे घरवालों की नाक में दम कर देते हैं।
● सीधे मुँह बात न करना— घमण्ड करना।
प्रयोग— जब से गोलू की लॉटरी लगी वह किसी से भी सीधे मुँह बात नहीं करता है।
● कान भरना— चुगली करना।
प्रयोग— मंथरा राम-लक्ष्मण के विपरीत कैकेयी के कान भरती रहती थी।

अनुभव विस्तार

1. छात्र पुस्तक में दिए निबंधों को पढ़कर स्वयं निबंध लेखन का अभ्यास करें।
2. बचपन में मैं गंगा स्नान करने अपने बड़े भाई के साथ गया था। वहाँ भीड़ अधिक होने पर मैं अपने भाई से बिछड़ गया और रात हो गई तब एक व्यक्ति ने मुझे मेरे घर तक पहुँचाया।
एक बार दो बच्चे अपने माँ-बाप से बिछड़ गए थे। मैंने उन्हें अपने घर लाकर उन्हें खाना खिलाया और उनके अभिभावक तक पहुँचाया। मैं समझता हूँ, जैसा किसी ने मेरे साथ किया वैसा ही मैंने किसी अन्य व्यक्ति के साथ भलाई का कार्य किया।
(नोट— बच्चे अपने बारे में घटित घटना लिखें)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. गरीबा **2.** चंचल
3. सोनू **4.** गणेशन
5. सोनू

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

16 श्रम की महिमा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) किसान **(ख)** (iii) जुलाहा
(ग) (ii) वकील **(घ)** (ii) श्रम करना
2. **(क)** बीज **(ख)** कंकड़
(ग) सफाई **(घ)** जुलाहों
3. **(क)** इस पंक्ति से कवि का आशय यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी काम को करने से छोटा या बड़ा नहीं होता है।
(ख) आश्रम के कार्य गांधीजी स्वयं ही करते थे क्योंकि वे श्रम करने को ही ईश्वर की पूजा मानते थे।

(ग) 'ऐसे थे गांधीजी' सम्बोधन में कवि का संकेत यह है कि आश्रम के हर कार्य को चाहे वह सूत कातना हो, अनाज से कंकड़ अलग करना हो, कपास धुनना हो, चक्की पीसना हो, कपड़ा बुनना हो, स्वयं किया करते थे। उन्हें स्वच्छता पसंद थी।

(घ) गांधीजी ने सेवा के काम को ईश्वरीय सेवा इसलिए माना है क्योंकि सेवा के काम में समर्पण, त्याग और निष्ठा का भाव होता है। इसके द्वारा ही व्यक्ति महान बनता है और अपने मन की सारी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है।

(ङ) इस कविता से हमें यह सीख मिलती है कि अपने सभी काम व्यक्ति को स्वयं करने चाहिए। काम करने से कोई भी व्यक्ति नीचा-ऊँचा अथवा बड़ा या छोटा नहीं होता है। काम करने के पीछे सेवा की भावना होती है। सेवा का कार्य ही ईश्वर की पूजा है।

(च) गांधीजी छोटे-से-छोटे कार्य को महत्त्व इसलिए देते थे क्योंकि छोटे से छोटा कार्य भी महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्येक छोटे कार्य से ही बड़े कार्य करने का मार्ग खुलता है और मन में व्याप्त हो रहे अहंकार का स्वयं ही विनाश हो जाता है।

4. **(क)** कवि कहते हैं कि गांधी जी का मानना था कि सेवा भाव से किया गया कोई भी काम ईश्वर सेवा होता है।

(ख) गांधीजी का मानना था कि कर्म करने वाला हर व्यक्ति समान होता है। घड़ी बनाने वाला हो या चप्पल बनाने वाला मोची हो। सभी के अपने-अपने कार्य होते हैं। इसमें कोई भी व्यक्ति काम करने से छोटा या बड़ा नहीं होता है।

(ग) कवि कहता है कि गांधीजी और उनका आश्रम ऐसा था, जिसमें वे श्रम को ही पूजा मानते थे।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. पुस्तक, जुलाहों, ईश्वर, उत्साह

3.

तद्भव	**तत्सम**
दूध	दुग्ध
घर	गृह
सूरज	सूर्य
मुँह	मुख
दाँत	दंत
आग	अग्नि

4.

(क) मुहावरे	(ख) अर्थ
1. चक्की पीसना	कड़ी मेहनत करना
2. कागज काले करना	व्यर्थ प्रयास करना
3. अक्ल ठिकाने आना	बात समझ आना
4. हाथ बढ़ाना	मदद के लिए आगे आना

5. (i) चश्मा (ii) लाठी (iii) खादी की धोती (iv) चरखा (v) घड़ी

6.
- व्यापारी— रामनगर में एक <u>व्यापारी</u> रहता था।
- कपड़ा— पहले <u>जुलाहा</u> कपड़ा बुनता था।
- आदमी— <u>आदमी</u> अपना काम स्वयं करता है।
- चक्की— बचपन में मेरी माँ जी सुबह जल्दी उठकर <u>चक्की</u> पीसती थीं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (ब), **4.** (द), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. झाड़ता **2.** बल
3. पूजा **4.** ईश्वर
5. पीसेंगे

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ग), **4.** (ख)।

17 संकल्प

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) मन में **(ख)** (ii) फूल से

2. **(क)** गरज-गरज। **(ख)** गिर-गिरकर। **(ग)** चुन-चुनकर।

3. **(क)** आत्म-विश्वास कार्य करने से बढ़ता है।

(ख) 'उद्गम रूप धरै' का आशय यह है कि बूँदें लगातार गिरने से नदी का उद्गम बन जाती हैं अर्थात्, नदी के प्रवाह को रूप दे देती है।

(ग) जब यह धरती सूरज की गरमी सहन करती है और फिर बादलों के बरस पड़ने पर ताप सहने वाली धरती जल को सोखती है, फिर धरती अपने अन्दर से बीज को उगाकर फल देती है।

(घ) सूर्य की किरणें जल को प्रतिदिन भाप के रूप में बदलती रहती हैं, वही भाप बादल का रूप धारण कर लेती है।

(ङ) कविता में संकल्प करने पर इसलिए बल दिया गया है क्योंकि दृढ़ संकल्प करके ही व्यक्ति अपने सुविचारित कार्य में सफलता प्राप्त करता है।

(च) अनेक हाथों से एक-एक तोड़े गए फूलों को धागे में पिरोने पर ही हार बनता है।

4. (क) भावार्थ—कवि कहता है कि जिस प्रकार आकाश से एक बूँद गिरती है, तो वह सूख ही जाती है लेकिन वही बूँद बार-बार गिरेगी तो वह एक घड़े को भर देती है। बूँदों के गिरने की निरन्तरता किसी भी नदी का उद्‌गम बन जाती है अर्थात् नदी के प्रवाह को रूप दे देती है। इसलिए बार-बार गिरकर हम चलना सीखते हैं। हमें गिरने से कभी डरना नहीं चाहिए। कवि के कहने का तात्पर्य है कि जीवन में असफलताएँ आती रहती हैं, पर हमें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि असफलता ही सफलता की सीढ़ी है।

(ख) कवि कहता है कि एक-एक फूल को चुनकर अनेक हाथों से गूँथे जाने पर ही हार (माला) बन पाता है। यदि हम जीतने का संकल्प लेकर विजय-पथ पर आगे बढ़ें तो हमें सफलता से कोई नहीं रोक सकता। हमें अपने जीवन में आने वाली रुकावटों से, बाधाओं से कभी डरना नहीं चाहिए।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2. बूँदें, संकल्प, दुर्गम, किरणें, पर्वत।

3. विश्वास — अविश्वास
पराजय — जय
धरती — आकाश
सुगम — दुर्गम

4. • **पथ**— जीवन के पथ पर अनेक बाधाएँ आती हैं।
• **प्रतिदिन**— अपना कार्य प्रतिदिन पूरा करो।
• **बादल**— कुछ बादल गरजते भी हैं और बरसते भी हैं।
• **विजय**— संघर्ष से ही विजय मिलती है।
• **काँटा**— पैर में काँटा चुभने पर बहुत दर्द हो रहा था।

5. सविता, पाहन, पीयूष, लता, गगन।

6. (क) • पथ-पर्वत • दुर्गम-सम
(ख) • बार-बार • गिर-भर।
(ग) • गिर-गिरकर • गरज-गरजकर।

अनुभव विस्तार

(क) बूँद-बूँद से घड़ा भरता है।
अर्थ— छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ा कार्य होना।

(ख) फल और काँटे का जीवन में यह महत्व है कि जब व्यक्ति फल की चाह करता है तो उसे काँटों से गुजरना पड़ता है अर्थात् जीवन में लक्ष्य (फल) प्राप्त करने के लिए मार्ग में आने वाली बाधाओं (काँटों) को झेलना पड़ता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (अ), **3.** (स), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. निज **2.** घट
3. गिर-गिर **4.** छोटा
5. सागर

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

18 परमानन्द माधवम्

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. (क) (i) 23 नवम्बर, 1909
(ख) (iii) चाँपा **(ग)** (ii) कुष्ठ रोग
(घ) (i) 16 मई, 1977

2. (क) करुणा **(ख)** कुष्ठ निवारण
(ग) अपनी पुत्री **(घ)** लखुर्री

3. **(क)** सदाशिवराव कात्रे का जन्म गुना (मध्य प्रदेश) जिले के आरौन ग्राम में हुआ था।
(ख) कुष्ठ रोगी से घृणा भाव होने का कारण कुष्ठ रोगी के घावों से द्रव का निरन्तर बहते रहना और भिनभिनाती मक्खियाँ हैं।
(ग) सदाशिवराव कात्रे सोचते थे कि कुष्ठ रोगी पिता की कन्या का वरण कौन करेगा। इस दृष्टि से उन्होंने अपनी पुत्री प्रभावती को पढ़ाया।
(घ) सदाशिवराव कात्रे के अथक परिश्रम एवं राष्ट्रभक्ति के भाव से समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने लगा।
(ङ) मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम हरिभाऊ पाटस्कर से प्रेरणा प्राप्त करके सदाशिवराव कात्रे ने कुष्ठ रोगियों की सेवा का कार्य प्रारम्भ किया।

4. **(क)** सदाशिवराव कात्रे के कुष्ठ रोग के कारण जीवन में घृणा, दुराव और निराशा भर गई थी परन्तु फिर भी उनके अन्दर जीवन जीने की लालसा स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। उन्होंने इन सभी विपरीत स्थितियों में कुष्ठ रोग को दूर करने का व्रत लिया और सुनियोजित प्रयास किए। इससे लगता था कि उनमें जिजीविषा विद्यमान थी।
(ख) सदाशिवराव कात्रे को परमानन्द माधवम् इसलिए कहा जाता था कि उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम समय तक कुष्ठ रोगियों की सेवा की, आश्रम व चिकित्सालय की स्थापना की। आश्रम में हर क्षण भगवत् भवन और संकीर्तन चलता रहता था। उनके प्रयास से कुष्ठ रोगियों का उपचार किया, समाज में रोगियों के प्रत सही धारणा बनने लगी। साथ ही सदाशिव का अर्थ परमानन्द और गोविन्द का नाम माधव भी होता है।, इसलिए उन्हें परमानन्द माधवम् कहा जाने लगा।
(ग) जब सदाशिराव कात्रे ने कुष्ठ रोगियों के इलाज का संकल्प लिया तब उनकी भेंट मध्य प्रदेश के राज्यपाल महामहिम हरिभाऊ पाटस्कर से हुई। उनसे प्रेरणा लेकर सेवा के कार्य में खुशी-खुशी लगे रहे। उन्हें कुष्ठ रोगियों की चिकित्सा एवं आवास के लिए लखुर्री नामक ग्राम में स्थान मिल गया। आगे चलकर यह आश्रम भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, चाँपा के नाम से सन् 1962 में विधिवत् स्थापित हो गया।

5. **(क)** प्रकृति ने भी सदाशिवराव कात्रे के साथ क्रूर उपहास किया है। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि सदाशिवराव कात्रे के पिता का देहावसान उस समय हो गया जब इनकी आयु आठ वर्ष थी। इनकी शिक्षा 'काका' के यहाँ झाँसी में हुई। इनका विवाह हुआ, इसी बीच उन्हें कुष्ठ रोग ने घेर लिया। इन्हें अपनी अल्पायु से ही आपदाओं ने घेरा हुआ था। कुष्ठ रोग एक भयानक रोग है जिससे समाज और अपने सभी छूट जाते हैं, किन्तु इन्होंने व्रत लेकर आजीवन कुष्ठ रोग से संघर्ष किया।
(ख) आश्रम में रहकर कोई कार्य करने हेतु इसलिए नही तैयार होता था क्योंकि रोगियों के अंगों से रिसता द्रव, भिनभिनाती मक्खियों से लोगों को घृणा लगती थी। बीमारी को देखकर सबकी अंतर्भावना डिग जाती थीं। सबको रोगों से भय लगता था।
(ग) सदाशिराव कात्रे के हृदय में करुणा उत्पन्न होने के दो कारण निम्नवत् हैं—
1. वे स्वयं कुष्ठ रोगी थे जिन्होंने स्वयं लोगों के बर्ताव को भोगा था।
2. उन रोगियों के प्रति घृणा एवं उपेक्षा भरा जीवन, सामाजिक असम्मान और घृणास्पद व्यवहार।
(घ) सदाशिवराव कात्रे को चांपा नगर में कुष्ठ रोगियों के लिए चिकित्सा और आवास के लिए लखुर्री ग्राम में स्थान मिल गया। यह संस्था पंजीबद्ध हो गई। सदाशिवराव के प्रयासों से, रामचरितमानस और महाभारत के दृष्टांतों से लोगों में कुष्ठ रोगियों के प्रति सेवा भाव जगने लगा। चाँपा के प्रतिष्ठावान और समझदार उदार व्यक्तियों ने विचार किया कि एक व्यक्ति ने रोगी होते हुए भी अपने पुरुषार्थ से आश्रम की स्थापना की, तब लोग कुष्ठ रोगियों की सेवा हेतु प्रेरित हुए। इस प्रकार सदाशिवराव के अथक परिश्रम और राष्ट्रभक्ति के भाव से लोगों में सकारात्मक सोच पैदा होने लगी।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण का अभ्यास करें।
2. आश्रम, देहावसान, दैदीप्यमान, अंतर्द्वन्द्व, राष्ट्र
3. दुर, उप, अ, अनु, वि

4. भलाई, लिपाई, पुताई, लिखाई, पढ़ाई, खवाई
5. चिकित्सा + आलय, देह + अवसान,
विवाह + उपरान्त, अल्प + आयु,
मत + अवलम्बी
6. ● **आत्मबल**– व्यक्ति को कभी भी अपना आत्मबल नहीं खोना चाहिए।
● **व्यवस्था**– सभी लोगों के सहयोग से आश्रम की व्यवस्था हुई।
● **सन्तोष**– जिसे सन्तोष है वही सुखी है।
● **कुष्ठरोगी**– लोग कुष्ठरोगी से बात नहीं करते।
● **जन्म**– मानव जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. अरौना **2.** चाँपा
3. कुष्ठरोग **4.** 16 मई, 1977
5. प्रभावती

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

19 खूनी हस्ताक्षर

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (ii) सुभाषचन्द्र बोस का
(ख) (iii) रक्त की स्याही से
(ग) (i) हिन्दुस्तानी विश्वास
2. **(क)** खून **(ख)** साधारण
(ग) युवक **(घ)** सौदा
3. **(क)** सुभाषचन्द्र बोस ने देश की आजादी के लिए बलिदान करने को कहा।
(ख) शीशों के फूल चढ़ाने से कवि का तात्पर्य अपनी मातृभूमि के लिए आत्मबलिदान करने से है।
(ग) जिस खून में आजादी प्राप्त करने के लिए उत्साह मर चुका होता है, जीवन की गति शून्य हो जाती है, वह खून-खून नहीं, पानी के समान होता है। ऐसे खून को पानी के समान कहा जाता है।
(घ) आजादी का इतिहास रक्त की लाल स्याही से लिखा जाता है।
(ङ) जिस कागज पर सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीयों से खूनी हस्ताक्षर करवाए थे उसे आजादी का परवाना कहा गया है।
(च) खूनी हस्ताक्षर से कवि का आशय इस बात से है कि हम भारतीय अपनी मातृभूमि के लिए लहू बहाने, बलिदान देने को तैयार हैं।
(छ) सुभाषचन्द्र बोस के नारे का यह प्रभाव पड़ा कि भारतीय नवयुवकों में आजादी के लिए जोश भर गया। वे उसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हो गए और रणक्षेत्र में जाने के लिए हुंकार भर उठे।
4. **(क) भावार्थ**– कवि कहते हैं कि स्वतंत्रता की देवी के चरणों में देशवासियों के शीशरूपी फूलों से गुँथी हुई विजयमाला समर्पित करनी होगी। यह आजादी की लड़ाई ऐसी नहीं लड़ी जाती।
(ख) भावार्थ– कवि कहते हैं कि नेताजी के आह्वान पर सभास्थल में मौजूद सभी लोग हुंकार भरकर कहने लगे कि हम भारत माता की आजादी के लिए अपना खून देने को तैयार हैं। भारत की स्वतंत्रता की देवी के चरणों में हम अपना रक्त चढ़ाने के लिए तैयार हैं। जितना चाहे ले लो। युवकों में जोश तथा साहस भरा था।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।
2. पानी– जल, तोय।
फूल– पुष्प, सुमन
धन– दौलत, द्रव्य
माता– जननी, जन्मदात्री
3.

शब्द	**विलोम शब्द**
स्वतन्त्रता	परतन्त्रता
सही	गलत
काला	सफेद

जीवन	मरण
विश्वास	अविश्वास

4. खून — रक्त
   कुरबानी — बलिदान
   आजादी — स्वतंत्रता
   कलम — लेखनी
   रवानी — प्रवाह, गतिशीलता
5. ● **खून में उबाल आना**— आतताइयों के अत्याचार से युवकों के खून में उबाल आ गया।
   ● **शीश कटाना**— देश की आजादी के लिए अनेक युवक शीश कटाने को तैयार हो गए।
   ● **खून की नदी बहाना**— भारतीय युवक देश की आजादी के लिए खून की नदियाँ बहाने को तैयार थे।
6. ● अर्पण— वीर सुभाष ने देश के लिए अपना सबकुछ अर्पण कर दिया।
   ● परवाना— आजादी के लिए अनेक परवाने अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार हो गए।
   ● जयमाल— भारवासी भारत माता के चरणों में आजादी की जयमाल चढ़ाने को तैयार हो गए।
   ● संग्राम— अंग्रेजों और भारतीयों के बीच घोर संग्राम छिड़ गया।
   ● रणवीर— रण में दुश्मन को ललकारने वाला योद्धा रणवीर कहलाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (द), **2.** (अ), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. उबाल **2.** जीवन
3. खूँ **4.** बर्मा
5. कटाने

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** सत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

20 रुपये की आत्मकथा

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iv) रुप्यकम् **(ख)** (ii) 64 पैसे
   (ग) (iii) देवनागरी
2. **(क)** शेरशाह सूरी **(ख)** 1957 ई.
3. **(क)** शेरशाह सूरी के सिक्के का वजन 178 ग्रेन था जो लगभग 11.5 ग्राम के बराबर था। उस कार्यकाल में रुपया चाँदी के सिक्के के रूप में था।
   (ख) रुपए को कागज के एक ओर बैंक ऑफ बंगाल ने मुद्रित किया था।
   (ग) प्राचीन समय में सोने और ताँबे के सिक्के रुप्यकम् के नाम से जाने जाते थे।
   (घ) रुपए के नए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप (₹) की डिजाइन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के प्राध्यापक श्री उदय कुमार ने की।
4. **(क)** हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में रुपए का नाम रुपया शब्द की समानता लिए हुआ है। जैसे गुजरात में रुपियाँ, कन्नड़ में रुपाई, मलयालम में रुपा, मराठी में रुपए नाम से जाना जाता है। इन सब भाषाओं में थोड़े परिवर्तन के साथ रुपए का स्वरूप एक ही है।
   (ख) दशमलवीकरण से पूर्व रुपए को आने, पैसे और पाई में बाँटा जाता था। उस समय, (स्वतन्त्रता से पूर्व) तीन पाई का एक पैसा, चार पैसे का एक आना होता था। इस प्रकार सोलह आने का एक रुपया होता था।
   (ग) वर्तमान में विभिन्न देशों की मुद्राओं के अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक प्रयोग में लाए जाते हैं। अमेरिका में 'डॉलर', ब्रिटेन में 'पौण्ड स्टर्लिंग', जापान में 'येन' व यूरोपीय संघ की मुद्रा 'यूरो' और भारत की मुद्रा रुपया।
5. **(क)** जब रुपया प्रचलन में नहीं था तब बाजार में लेन-देन वस्तु के बदले वस्तु द्वारा होता था। उस समय बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। जब किसी को दूध की जरूरत है तो वह दूधवाले के पास गेहूँ लेकर जाता था और यदि दूध वाले को गेहूँ की जरूरत है तो बात बन जाती थी।
   (ख) रुपये को कागज में मुद्रित करने के अनेक लाभ हैं। मुद्रित रुपयों को लाने और ले जाने में आसानी और सुगमता होती है। चोरी और लूट का अंदेशा कम हो गया है। मुद्रा के नष्ट होने

पर शीघ्र ही छपाई होकर उसकी भरपाई की जा सकती है। रुपये की सभी को जरूरत है क्योंकि उसे देकर कोई भी चीज खरीदी जा सकती है।

(ग) अब भारतीय रुपया विदेश जाने पर चल सकेगा क्योंकि अब रुपये ने अपना अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली है। रुपये ने भी डॉलर, पौण्ड और यूरो की तरह अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में पहचान बना ली है।

6. **(क)** यदि रुपए का प्रचलन न होता तो बाजार में वस्तु विनिमय प्रणाली चलती। इस प्रकार वस्तुओं के खरीदने और बेचने में बड़ी कठिनाई होती। वस्तु के बदले वस्तु को भार के रूप में इधर से उधर लाना और ले जाना पड़ता। साथ ही, वस्तु का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता। खरीदने वाले की वस्तु का मूल्य बेचने वाले के द्वारा निर्धारित होता। इस तरह व्यापारी खरीददार को ठगता।

(ख) यदि कागज पर रुपये की शुरुआत न होती तो धातु की मुद्रा का बोझ लादकर बाजार में वस्तु खरीदने के लिए जाना पड़ता। कागज की मुद्रा आसानी से और बिना भार के एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाई जा सकती है। ठगी और चोरी का डर बढ़ गया होता। धातु की मुद्राओं के गिनने में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण और लिखने का अभ्यास करें।

2. मुद्रित, आर्थिक, चिह्न, दशमलव, बाँटा।

3. अनु + राग ('अनु' उपसर्ग)
अप + मान ('अप' उपसर्ग)
अनु + मान ('अनु' उपसर्ग)
अप + कार ('अप' उपसर्ग)

4. भारत + ईय = भारतीय
यूरोप + ईय = यूरोपीय
स्वर्ग + ईय = स्वर्गीय,
शासक + ईय = शासकीय

5. • **पाठ्यपुस्तक**– हिन्दी की पाठ्यपुस्तक पढ़ने में बड़ी रोचक लगती है।
• **सिक्का**– प्राचीन भारतीय सिक्का बेश-कीमती था।
• **स्वतन्त्रता**– सबको मौलिक स्वतन्त्रता का अधिकार है।
• **मुद्रा**– अब भारतीय मुद्रा को प्रतीक मिल चुका है।
• **शासन**– अंग्रेजी शासन में लोग डरे-सहमे रहते थे।

6. शिक्षा + अर्थी, कवि + ईश्वर, नदी + ईश, भानु + उदय, महा + आत्मा, परीक्षा + अर्थी

7. **(क)** उचित शीर्षक है– रुपये का स्वरूप।
(ख) हम रुपये को सजावट और माला में उपयोग न करें। साथ ही उसे तोड़-मरोड़कर न रखें। इसके स्वरूप को बनाए रखकर सुरक्षित रख सकते हैं।

8. दृष्टि, दर्शन, कर्म, गृह, सूर्य, क्रम।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (ब), **3.** (ब), **4.** (अ), **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. इण्डोनेशिया **2.** कागज
3. बैंक ऑफ बंगाल **4.** 15 जुलाई 2010
5. विदेशों **6.** नए पैसे

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** असत्य।

सुमेलन

1. (ग), **2.** (घ), **3.** (ख), **4.** (क)।

21 मेरी माँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iv) सोमदेव **(ख)** (iii) अधीर

2. **(क)** पढ़ना-लिखना **(ख)** आर्यसमाज
(ग) माता **(घ)** बहुत प्रसन्न
(ङ) शिक्षा

3. **(क)** बिस्मिल का सेवा समिति में सहयोग देना पिताजी और उनकी दादीजी को पसन्द नहीं था।
(ख) रामप्रसाद 'बिस्मिल' में जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह उनकी माताजी और गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपा का फल था।
(ग) बिस्मिल की दादीजी ने अपनी छोटी बहन को शाहजहाँपुर बुला लिया था। उन्हीं ने माताजी को गृहकार्य आदि की शिक्षा प्रदान की।

(घ) बिस्मिल की बहनों को छोटी आयु में उनकी माताजी शिक्षा दिया करती थीं।

(ङ) शिक्षादि के अतिरिक्त माताजी बिस्मिल को देश सेवा और धार्मिक जीवन में भी सहायता करती थीं। वे संकटों के समय भी बिस्मिल को अधीर नहीं होने देती थीं। वे बिस्मिल के आत्मिक, धार्मिक और समाजिक जीवन में भी सहायक रहीं।

4. **(क)** एक बार कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने पिताजी की अनुपस्थिति में बिस्मिल को बुलवाकर उनसे वकालतनामे पर अपने पिताजी के हस्ताक्षर करने को कहा। बिस्मिल ने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म के विरुद्ध होगा। इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। सदैव सत्य के मार्ग पर चलने वाले बिस्मिल ने वकील साहब के यह समझाने पर भी हस्ताक्षर नहीं किया।

(ख) बिस्मिल की माताजी का उनके लिए सबसे बड़ा आदेश यह था कि उनके द्वारा किसी के भी प्राणों की हानि न हो। उनका कहना था कि कभी अपने शत्रु को भी प्राणदण्ड न देना। माताजी के इस आदेश की पूर्ति करने के लिए कई बार बिस्मिल को मजबूरी में अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी। बिस्मिल के जीवन और चरित्र–निर्माण में उनकी माताजी का बहुत बड़ा योगदान था।

(ग) बिस्मिल की एकमात्र इच्छा बस यह थी कि वह एक बार श्रद्धापूर्वक अपनी माताजी के चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना सकें। उनकी यह इच्छा उन्हें पूरी होती इसलिए नहीं दिखाई दे रही थी क्योंकि काकोरी कांड में उनके साथियों के साथ उन्हें भी फाँसी की सजा सुनाई गई थी। इस कारण माताजी की सेवा करने की उनकी इच्छा उन्हें अधूरी रहती दिखाई पड़ रही थी।

(घ) धर्म की रक्षा के लिए जब गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों को जीवित दीवार में चिनवा दिया गया, तब इस दुखद घटना की सूचना पाकर भी उनकी पत्नी तनिक भी विचलित नहीं हुई बल्कि अपने पुत्रों की खबर सुनकर वह प्रसन्न हुई और गुरु के नाम पर धर्म–रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर उन्होंने मिठाई बाँटी और गर्व का अनुभव किया।

(ङ) बिस्मिल ने अन्तिम समय में अपनी माँ से यह वर माँगा कि हे जन्मदात्री! वर दो कि अन्तिम समय भी उनका हृदय विचलित न हो। वह यह भी चाहते थे कि वह अन्तिम समय में अपनी माँ के चरण–कमलों को प्रणाम कर व परमात्मा को स्मरण करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का त्याग कर सकें।

5. **(क)** रामप्रसाद 'बिस्मिल' की दादीजी और पिताजी को उनका इस प्रकार क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेना पसन्द नहीं था। वे चाहते थे कि समय पर बिस्मिल का विवाह कर दिया जाये ताकि वह अपने परिवार की जिम्मेदारियों को समझें। यदि बिस्मिल की दादीजी और पिताजी की इच्छानुसार उनका विवाह कर दिया जाता तो वह भी एक सामान्य गृहस्थ की तरह अपने घर–परिवार में उलझकर रह जाते और उन्हें देश–सेवा करने का अवसर तक प्राप्त न हो पाता। इस प्रकार माँ भारती अपने ऐसे यशस्वी पुत्र के साहसिक कारनामों के लाभ से वंचित रह जाती जिन्हें देख–सुनकर अंग्रेजी सरकार काँप उठती थी। इस प्रकार एक सच्चे देशभक्त के रूप में आज उन्हें जो सम्मान प्राप्त हुआ है, वह न हो पाता।

(ख) यदि बिस्मिल के प्रति माताजी का व्यवहार भी पिताजी की तरह कठोर होता तो उनकी साहसिक भावनाएँ दमन होकर रह जातीं। उनके व्यक्तित्व में वीरता, शौर्य, पराक्रम, दूरदर्शिता, देशप्रेम, सत्य, दया, करुणा और ओज जैसे श्रेष्ठ मानवीय गुण भी विकसित नहीं हो पाते। वे पिताजी की इच्छानुसार विवाह करके गृहस्थ जीवन का निर्वाह करने में लग जाते किन्तु एक महान देशभक्त और स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में जो स्थान आज वे पा सके हैं, कभी न प्राप्त कर पाते।

6. **(क)** अपने गाँव को पर्यावरण की सुरक्षा और प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिए मैं सभी गाँववालों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें स्वच्छ पर्यावरण मानव जीवन को मिलने वाले लाभ के बारे में जानकारी दूँगा। साथ ही हरे–भरे पेड़ों के काटने पर प्रतिबन्ध लगवाऊँगा। साथियों के सहयोग से एक दल बनाकर जगह–जगह नये पौधे लगाऊँगा तथा उनके पेड़ बनने तक उनकी देखभाल करूँगा। जल के सभी उपलब्ध स्रोतों को साफ रखने के

लिए उनके आस-पास जानवरों को नहलाने, कपड़े धोने, गन्दगी फैलाने, कूड़ा-करकट डालने पर रोक लगाऊँगा। लोगों को प्लास्टिक का उपयोग न करने की सलाह दूँगा।

(ख) यदि मुझे विद्यालय के छात्र संघ का अध्यक्ष बना दिया जाए तो मैं सबसे पहले विद्यालय के वातावरण को शिक्षा के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करूँगा। इसके अतिरिक्त मेरा ध्यान नियमित पूरी कक्षाएँ लगवाने, विद्यार्थियों की समस्या का निदान ढूँढ़ने, अनुशासन बनाये रखने इत्यादि पर होगा। इसके अतिरिक्त मैं यह भी चाहूँगा कि मेरे विद्यालय में पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ खेलकूद के लिए भी उपयुक्त व्यवस्था हो ताकि विद्यार्थी मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करने का अभ्यास करें।

2.

'क्ष'	'छ'	'च्छ'
कक्षा	छाता	इच्छा
शिक्षा	छात्र	स्वेच्छा
क्षमा	छतरी	मच्छर

3. सहयोग, जीवन, दृढ़ता, कदापि, भोजनादि, शिक्षादि, अवर्णनीय, कलंकित, धार्मिक, आत्मिक, सामाजिक।

4.

धृष्टता	– ('ता' प्रत्यय)
सामाजिक	– ('इक' प्रत्यय)
वर्णनीय	– ('ईय' प्रत्यय)
कलंकित	– ('इत' प्रत्यय)
व्यक्तित्व	– (त्व' प्रत्यय)
दृढ़ता	– ('ता' प्रत्यय)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (अ), **2.** (स), **3.** (अ), **4.** (अ), **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. लखनऊ **2.** ग्यारह
3. पढ़ने **4.** धार्मिक
5. सोमदेव

सत्य/असत्य कथन

1. असत्य, **2.** सत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

22 मैं श्रीमद्भगवद्गीता हूँ

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (iii) युद्धभूमि में
(ख) (iv) पाँच हजार वर्ष पूर्व
(ग) (ii) अर्जुन के मन में
(घ) (iii) अठारह

2. **(क)** हरियाणा **(ख)** गाण्डीव
(ग) विचलित **(घ)** श्रीकृष्ण
(ङ) स्वधर्म पालन

3. **(क)** कौरवों और पाण्डवों के बीच राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध हुआ। पाण्डव अपना अधिकार चाहते थे जबकि कौरव उन्हें सुई की नोक भर भी नहीं देना चाहते थे।

(ख) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान का उपदेश दिया।

(ग) श्रीकृष्ण के अनुसार संसार में आत्मा के अतिरिक्त सभी कुछ नाशवान है।

(घ) गीता ने आसुरी स्वभाव वाले व्यक्ति को नापसन्द किया है।

4. **(क)** धैर्यवान पुरुष और सुख-दु:ख को समान समझने वाले व्यक्ति को इन्द्रियों और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते। ऐसा व्यक्ति मोक्ष के योग्य होता है।

(ख) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता के माध्यम से पुरुषार्थी बनने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि पलायन कभी भी मनुष्य के यश में वृद्धि नहीं कर सकता। मनुष्य को सत्य, न्याय और अधिकार की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर युद्ध के लिए तत्पर रहना चाहिए। आत्मा अजर एवं अमर है, उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता। अत: परिजन, मोह त्यागकर उसे अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए युद्ध करना चाहिए।

(ग) युद्धभूमि में अपने कर्त्तव्य से विमुख शोकमग्न अर्जुन को स्वधर्म का मार्ग बतलाने और मोह तथा अज्ञान से मुक्त कराने के लिए श्रीकृष्ण ने गीता ज्ञान का उपदेश दिया। इसलिए साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकली

हुई होने के कारण गीता को परमात्मा की वाणी भी कहा जाता है।

(घ) युद्धभूमि में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से, जो उनके रथ के सारथी भी थे, अपना रथ दोनों सेनाओं के बीच ले चलने के लिए कहा। श्रीकृष्ण अर्जुन के रथ को दोनों सेनाओं के मध्य ले गए। अर्जुन ने जब दोनों ओर अपने सगे-सम्बन्धियों, परिवारजनों, प्रियजनों को खड़े देखा तो वह मोहपाश में जकड़कर भ्रमित हो गया।

(ङ) भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकली श्रीमद्भगवद्गीता वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है। आज भी न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म का युद्ध व्यक्ति के अन्दर चल रहा है। स्वार्थ और आसुरी वृत्तियाँ आज भी समाज में संघर्ष, तनाव तथा भय पैदा करती रहती हैं। मोह-ममता से ग्रसित व्यक्ति आज भी कर्तव्य पालन से कतराता है। वह सत्य व्यवहार नहीं करता। अत: मैंने तब भी कहा था कि न्याय और धर्म का पक्ष लेना चाहिए, मोह रहित होना चाहिए। जीवन की सार्थकता मोह और कायरता त्यागने में है।

5. (क) जब गीता नहीं थी तो लोगों को जीवन जीने की कला की शिक्षा सम्भवतया महापुरुषों से प्राप्त होती रही होगी। ऋषि-मुनि एवं साधु-सन्त तब के लोगों को उत्तम और सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करते रहे होंगे। साथ ही, मनुष्य संस्कारों और अपने पूर्वजों के उच्च आदर्शों का अनुकरण करते हुए जीवन को सही मार्ग की ओर ले जाता होगा।

(ख) 'गीता ने कहा है कि सात सौ श्लोक मेरे संदेशवाहक हैं।' इसकी सार्थकता इस प्रकार है कि गीता एक अनुपम कृति है जो राग-द्वेष रहित जीवन जीने और आसुरी प्रवृत्तियों का विरोध करने की शिक्षा देती है। वास्तव में गीता की सम्पूर्ण शिक्षाएँ कुल अठारह अध्यायों में संरक्षित हैं। ये शिक्षाएँ इन अठारह अध्यायों में सात सौ श्लोकों में विद्यमान हैं। इन सात सौ श्लोकों में से प्रत्येक श्लोक मानव-जीवन के कल्याण हेतु एक सच्चे संदेशवाहक का कार्य करता है जिसका अनुसरण करके व्यक्ति मोह भ्रम से रहित हो जाता है।

(ग) कौरव और पाण्डवों के बीच हुए युद्ध को न्याय-अन्याय का युद्ध इसलिए कहा गया है पाण्डव अपनी मर्यादा में रहते हुए धर्म और न्याय के पक्ष में युद्ध कर रहे थे और कौरव मद में चूर राज्य-लोलुपता और मर्यादा की रेखा तोड़ कर अधर्म के पक्ष में युद्ध कर रहे थे। पाण्डव अपना नैतिक एवं जायज अधिकार चाहते थे जबकि कौरव उन्हें सुई की नोंक के बराबर भूमि भी देने को तैयार न थे। ऐसे में धर्म और अधर्म के बीच युद्ध आवश्यक हो गया।

(घ) यदि हम आसक्ति भाव से कर्म करेंगे तो हमारा ध्यान, कर्म पर न लगकर उससे प्राप्त होने वाले परिणाम पर केन्द्रित रहेगा और हानि-लाभ तथा भय से संशय युक्त हो जाएगा और वांछित लाभ दुर्लभ हो जाएगा। साथ ही वांछित परिणाम प्राप्त न होने पर मनुष्य का मन हीन भावना एवं अवसाद से घिर जाएगा। इसीलिए गीता आसक्ति रहित कर्म करते रहने की प्रेरणा देती है।

6. (क) यदि कौरवों और पाण्डवों में युद्ध न हुआ होता तो एक तरफ मानव सभ्यता महाभारत जैसे भीषण युद्ध की विभीषिका से बच जाती लेकिन दूसरी तरफ उसे मानव कल्याण रूपी गीता जैसे अमृत ग्रन्थ की प्राप्ति भी न हो पाती।

(ख) यदि कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन द्वारा सगे-सम्बन्धियों को देखकर मोह उत्पन्न न हुआ होता तो भगवान श्रीकृष्ण ने अकारण ही गीता का उपदेश नहीं दिया होता।

इस प्रकार गीता जैसे महान ग्रन्थ की रचना भी नहीं हुई होती और मानव सभ्यता गीता के उपदेशों से वंचित रह जाती।

(ग) यदि अर्जुन की जगह मैं होता तो मुझे भी अर्जुन की तरह मोह घेरता किन्तु यदि मुझे भगवान श्रीकृष्ण का साथ मिलता तो मैं अवश्य युद्ध करता। मैं कायरता के भाव को अपने मन में न आने देता और अपने क्षत्रिय धर्म का बख़ूबी पालन करता। युद्ध का परिणाम कुछ भी क्यों न होता।

(घ) यदि कृष्ण, अर्जुन के सखा एवं हितैषी न होते तो मोहवश अपने क्षत्रिय धर्म से विमुख अर्जुन को उसके कर्तव्य का ज्ञान कौन कराता? ऐसे में पाण्डवों को कौरवों के सामने संभवत: टिकना मुश्किल हो जाता। इतिहास में उसका नाम एक वीर योद्धा के रूप में दर्ज न होकर युद्ध से पलायन करने वाले एवं मोहमाया में जकड़े एक कायर के रूप में लिखा होता। साथ ही, आसुरी प्रवृत्तियों का बोलबाला हो जाता और अधर्म के सामने धर्म अस्त्र डालने के लिए मजबूर हो जाता।

(ङ) यदि दुर्योधन किसी तरह राज्य का उत्तराधिकारी बन जाता तो चारों ओर अन्याय और अधर्म का साम्राज्य होता। ऐसे में सत्य और धर्म का आचरण करने वालों का जीवन जीना कठिन हो जाता। चारों ओर लूट-खसोट और अराजकता फैल जाती। इस प्रकार, अधर्म करने वाले लोग समाज में फलते-फूलते और भारतीय संस्कृति कलंकित हो जाती।

भाषा की बात

1. छात्र अध्यापक महोदय की सहायता से स्वयं उच्चारण करें।

2. भ्रमित, वितृष्णा, विरक्ति, किंकर्तव्य, संन्यास, तात्विक, सम्मत, संघर्ष, व्याप्त।

3. गुरु+त्व=गुरुत्व; पुरुष+त्व=पुरुषत्व; कृति+त्व= कृतित्व।

4. **राज्य प्राप्ति**– पाण्डवों को कौरवों से युद्ध करके ही राज्य प्राप्ति हुई।

युद्धभूमि– दु:शासन युद्धभूमि में मारा गया।

कारागार– पुलिस ने चोर को पकड़कर कारागार में डाल दिया।

मोर्चा– राणाप्रताप ने मुगलों के विरुद्ध स्वयं युद्ध का मोर्चा संभाला।

शिथिल– धर्म के सामने अधर्म शिथिल पड़ गया।

5. 1. गांधीजी के अनुसार गीता सारे शास्त्रों का दोहन है। इसमें सारे उपनिषदों का निचोड़ सात सौ श्लोकों में निहित है।

2. गांधीजी संकट के समय गीता-माता के पास जाते थे।

3. अपनी शरण में आने वाले को गीता ज्ञानामृत से तृप्त करती है।

4. गद्यांश का शीर्षक है–गीतामाता।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ब), **2.** (स), **3.** (अ), **4.** (ब), **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. वितृष्णा **2.** स्वजनों
3. परमात्मा **4.** पुरुषार्थी
5. पलायन **6.** नापसन्द

सत्य/असत्य कथन

1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य।

सुमेलन

1. (घ), **2.** (क), **3.** (ख), **4.** (ग)।

विविध प्रश्नावली–3

पाठ्यपुस्तक के अभ्यास प्रश्न

1. **(क)** (i) बगीचा
(ख) (iii) महात्मा गाँधी
(ग) (i) धौम्य
(घ) (iii) परमानन्द माधवम्
(ङ) (iii) सामाजिक

2. **(क)** महात्मा गाँधी **(ख)** कोयल
(ग) 1977 ई. **(घ)** अन्तर्राष्ट्रीय
(ङ) सहजता

3. **(क)** केरलवासी नृत्य और संगीत के बड़े शौकीन हैं।

(ख) सोनू के छत से गिर जाने पर अनेक लोगों को सोनू की सहायता के लिए देखकर शीला दंग रह गई। उसे विश्वास हो गया कि जो समाज की सेवा करता है समाज उसकी सेवा करता है। उस दिन से शीला की रुचि समाज सेवा में उत्पन्न हो गई।

(ग) आरुणि ने गुरु सेवा को ही शिष्य का परमधर्म कहा है।

(घ) वर्तमान में अपने स्वार्थ के लिए मानव द्वारा पेड़-पौधों को काटकर हरियाली को समाप्त कर देने से बसन्त का स्वरूप बदल गया है।

(ङ) बिस्मिल की माताजी ने गृहकार्य की शिक्षा दादीजी की छोटी बहन से प्राप्त की थी।

(च) 1. अकर्मक क्रिया– रमन हँसता है। 'हँसना' अकर्मक क्रिया है।

2. सकर्मक क्रिया– गीता पत्र लिखती है। लिखना सकर्मक क्रिया है।

4. **(क)** गांधीजी आश्रम में होने वाले सारे काम स्वयं करते थे। वे सूत कातते थे, कपड़ा बुनते थे, कपास धुनते थे। आश्रम के लोगों के भोजन के लिए अनाज में से कंकड़ चुनकर उसे साफ किया करते थे। अनाज से आटा बनाने के लिए चक्की में अनाज पीसते और पुस्तकों की जिल्दसाजी भी करते थे। वे किसी भी काम को छोटा-बड़ा नहीं समझते थे।

(ख) 'आत्म-बलिदान' एकांकी का मूल भाव यह है कि गुरु और शिष्य दोनों ही एक-दूसरे के लिए समर्पित रहते हैं। गुरु के शिष्यों के प्रति शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास की चिन्ता रखते हैं। शिष्य भी आश्रम के सारे कार्यों में हाथ बटाने का प्रयास करते हैं। धौम्य ऋषि को अतिवृष्टि से खेत की मिट्टी बह जाने की चिन्ता है। आरुणि भी उन्हें चिन्ता मुक्त करने के प्रयास हेतु मेड़ के कटाव में स्वयं लेट जाता है और मिट्टी के कटाव को रोक देता है। गुरु भी उसे तलाशते हुए विपरीत मौसम में जाते हैं। उन्हें उसके स्वास्थ्य की चिन्ता है। इस तरह गुरु और शिष्य दोनों परस्पर सेवा में समर्पित हैं।

(ग) हम्मीर रणथम्भौर के राणा थे। उन्होंने जेल से फरार माहमशाह को अपने यहाँ शरण देने का वचन देते हैं। राणा हम्मीर के सामंत और सरदार सभी इसके विरुद्ध थे लेकिन राणा ने क्षत्रिय धर्म और राजपूत होने की श्रेष्ठता बताते हुए उनकी सलाह नहीं मानी। वे शरणागत को सुरक्षा देना राजपूत का कर्तव्य बताते थे। उसकी पूर्ति के लिए अपनी आन, बान, शान की परवाह नहीं की। यहाँ तक कि अपने प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटे।

(घ) दशमलव प्रणाली में रुपये को सौ पैसों में बाँटा गया है। इस तरह छोटे सिक्कों के रूप में 50 पैसे, 25 पैसे, 20 पैसे, 10 पैसे, 5 पैसे, 3 पैसे, 2 पैसे तथा 1 पैसे के सिक्के भी प्रचलन में आए। उन्हें नए पैसे कहा गया।

(ङ) सुभाषचन्द्र बोस ने युवकों को आजादी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि आजादी के लिए बलिदान देना होगा। जिन युवकों के खून में स्वतंत्रता हेतु उबाल नहीं, गतिशीलता नहीं, उनका खून खून नहीं पानी के समान है। आजादी की लड़ाई शीश कटाने का सौदा है। आजादी का इतिहास खून की लाल स्याही से लिखा जाता है। इतना सुनते ही युवकों ने आजादी के परवाने पर अपने खून से हस्ताक्षर कर दिए। उस दिन हिन्दुस्तानियों के उत्साह को आकाश के तारों ने भी देखा था।

(च) एक बार बिस्मिल के पिताजी ने वकील से विश्वास के साथ कह दिया कि जो काम हो वह उनकी अनुपस्थिति में बिस्मिल से करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने बिस्मिल को बुलावाकर उनसे वकालतनामे पर अपने पिताजी के हस्ताक्षर करने को कहा। बिस्मिल ने यह कहते हुए मना कर दिया कि यह तो धर्म के विरुद्ध होगा। सदैव सत्य के मार्ग पर चलने वाले बिस्मिल ने वकील साहब के यह समझाने पर भी हस्ताक्षर नहीं किये कि हस्ताक्षर न करने पर मुकदमा खारिज हो जायेगा।

5. (क) लेखक का तात्पर्य यह है कि धन कमाने के लिए लोग अनेक तरीके अपनाते हैं। कुछ लोग बातों के बल पर धन कमा लेते हैं। यानी उनका कार्य दलाली, बट्टे या कानूनी दाँव पेंच लड़ाकर धन एकत्र कर लेना है। कुछ लोग पैसा लगाकर पैसा कमाते हैं यानी वे व्यापार से धन कमा लेते हैं। कुछ लोग अपने दिमाग चलाकर मानसिक परिश्रम से धन कमा लेते हैं। ऐसे लोग जल्दी ही बूढे हो जाते हैं, उन्हें रक्तचाप और हाथ-पैर के जोड़ों का दर्द शुरू हो जाता है। लेकिन वे लोग जो अपने हाथ-पैर से परिश्रम करते हैं और बुद्धि के बल पर धन कमाने वाले होते हैं। ऐसे लोग प्राय: लम्बे समय तक काम करते रहते हैं और किसी के सामने उन्हें लाचार नहीं होना पड़ता।

(ख) धौम्य अपने शिष्य उपमन्यु को बताते हैं कि वह अभी अधखिले फूल के समान है। वह अभी पूरी तरह फूल नहीं बन पाया। यदि ऐसे में उसे पौधे से अलग कर दिया जाए, तो वह अधखिला ही मुरझा जाएगा। इसी तरह उपमन्यु अभी अधखिले फूल के समान है। उसके विकास हेतु अभी अपने गुरुरूपी पौधे के आश्रय की जरूरत है। यदि उसे गुरुरूपी पौधे से अलग कर दिया गया तो पुष्परूपी शिष्य उपमन्यु अपनी अविकसित अवस्था में संकट में पड़ जाएगा। इस पर गुरुरूपी पौधे को अपार कष्ट होगा।

6. (क) भावार्थ— बसन्त के बदलते स्वरूप से चिंतित कवि संसार के लोगों से कहता है कि बसन्त के कष्ट को समझो और उसे बँटाने का प्रयास करो। जंगल से ही जीवन सम्भव है, इसलिए इन जंगलों को मत काटो। अधिक-से-अधिक वन लगाओ और पर्यावरण सुधार में मदद करो।

(ख) भावार्थ— कवि कहता है कि यह बात याद रखो कि यह आजादी की लड़ाई कभी भी पैसों के आधार पर नहीं लड़ी जा सकती। यह तो सिर कटवाने का सौदा है। इस सिर कटाने के सौदे को नंगे सिर ही झेलना पड़ता है अर्थात् देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने की जरूरत है।

7. 1. अमेरिका— डॉलर।
2. जापान— येन।

8. फिर उसी रक्त की स्याही में,
वे अपनी कलम डुबाते थे।
आजादी के परवाने पर
हस्ताक्षर करते जाते थे।

9. 1. अपने ही बल पर काम करने को स्वावलम्बन कहते हैं।
2. कर्त्तव्यपरायणता।
3. स्वावलम्बी पुरुष को समाज, राष्ट्र और जाति से सम्मान मिलता है।
4. उचित शीर्षक होगा— स्वावलम्बन।

10. छात्र व्याकरण भाग में 'पत्र लेखन' देखें और स्वयं अभ्यास करें।

11. छात्र व्याकरण भाग में 'निबन्ध लेखन' देखें और स्वयं अभ्यास करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र

1. **(क)** (ii) थलचर। **(ख)** (iv) विक्रमादित्य। **(ग)** (iii) दैनिक। **(घ)** (iv) सोमदेव। **(ङ)** (iii) शांतनु। **(च)** (iv) भीमबेटका में।

2. **(क)** पद्म-भूषण। **(ख)** जवानी। **(ग)** जल। **(घ)** श्वसन।

3. **(क)** बाबा भारती अपने घोड़े को 'सुल्तान' नाम से पुकारते थे।

(ख) भौतिक तत्वों की सन्तुलित मात्रा को 'सन्तुलित आहार' कहते हैं।

(ग) मीराबाई ने आँसुओं से सींचकर प्रेम की बेल बोई है।

(घ) वीर शिवाजी की गाथाएँ लक्ष्मीबाई को मौखिक रूप से याद थीं।

(ङ) बिस्मिल ने अन्तिम समय में अपनी माँ से यह वर माँगा कि हे जन्मदात्री ! वर दो कि अंतिम समय भी उनका हृदय विचलित न हो। वह यह भी चाहते थे कि वह अन्तिम समय में अपनी माँ के चरण-कमलों को प्रणाम कर व परमात्मा को स्मरण करते हुए मातृभूमि की रक्षार्थ अपने प्राणों का त्याग कर सके।

(च) कौरवों और पाण्डवों के बीच राज्य-प्राप्ति के लिए युद्ध हुआ। पाण्डव अपना अधिकार चाहते थे जबकि कौरव सुई की नोक भर भी नहीं देना चाहते थे।

(छ) अपमान का अनुभव करना।

(ज) शिवाजी ने जिस वीर बालक को अपनी सेना में लिया उसका नाम सॉवल्या था।

4. **(क)** जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन और कारक के आधार पर बदल जाते हैं, उन्हें **विकारी शब्द** कहते हैं। जैसे—लड़का, लड़के लड़को; मैं, मुझे आदि। जबकि जिन शब्दों में लिंग, वचन और कारक के द्वारा कोई परिवर्तन नहीं होता है अर्थात् जिनका रूप एक-सा रहता है, उन्हें **अविकारी शब्द** कहते हैं। जैसे—यहाँ, वहाँ, प्रतिदिन, परन्तु, भी, ही, आज आदि।

(ख) अनुप्रास अलंकार का उदाहरण— 'चारु चन्द की चंचल किरणें खेल रही थीं जल-थल में'। च वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

(ग) (i) विनम्रता ही बड़प्पन की निशानी है।
(ii) इंग्लैण्ड की यात्रा पर भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् सन् 1963 ई. में गए।
(iii) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'विनम्रता' है।
(iv) उक्त गद्यांश का सारांश है कि कोई भी व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो, किन्तु विनम्रता के अभाव में वह सम्मान नहीं पा सकता। विनम्रता से वह अवश्य सम्मान प्राप्त कर सकता है।

5. बसन्त के दु:खी होने के कारण वृक्षों को काट कर तथा हरे-भरे जंगलों को उजाड़कर लोगों द्वारा वहाँ भूमि और वन-सम्पदा को आपस में बाँट लेना है।

अथवा

गांधीजी के आश्रम में रहने वाले काम लोग स्वयं करते थे। वे सूत कातते थे, कपड़ा बुनते थे। वहाँ जुलाहों जैसी उत्तम प्रकार की कपास की धुनाई की जाती थी। अनाज से कंकड़ बीनकर साफ किया जाता तथा चक्की से अनाज पीसकर आश्रमवासियों के लिए रोटियाँ आदि बनाई जाती थीं। साफ-सफाई का काम लोग आश्रम में करते थे। वे किसी भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझते थे।

6. उक्त पंक्ति का आशय यह है कि कटु वचन और मधुर वचन भी इसी जीभ से बोले जाते हैं। कटु वचन से संसार में शत्रुता बढ़ जाती है। इससे अनेक दुष्परिणाम निकले हैं। वाणी की कटुता से ही महाभारत जैसा युद्ध हुआ। इतिहास इस

बात का गवाह है अत: कटु वचन से स्वर्ग भी नर्क में बदल जाता है। अत: वाणी (जीभ) से बड़े-बड़े अनर्थ हो जाते हैं।

अथवा

ईश्वर के द्वारा भेजा गया दूत जब ईश्वर के पास लौटा तो उसने डरते-डरते ईश्वर को एक पुड़िया सौंपी। ईश्वर ने पुड़िया खोली तो उसमें मिट्टी देखकर दंग रह गए। ईश्वर ने पूछा कि तुम तो इस पुड़िया में मिट्टी ले आए हो। दूत ने बताया कि उसने सबसे अच्छी वस्तु लाने के लिए पृथ्वी पर चप्पा-चप्पा खोज निकाला, लेकिन कोई भी ऐसी वस्तु नहीं दिखी जिसे मैं लेकर आपको दे सकूँ। अन्त में मैं ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ लोगों ने मानवता की रक्षा के लिए प्रसन्नता से अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। तब मुझे लगा कि इस स्थान की मिट्टी सबसे महत्वपूर्ण है। अत: मैं वहाँ से इस पुड़िया में मिट्टी लेकर आया हूँ। ईश्वर ने भी उस पुड़िया की मिट्टी को अपने मस्तक से लगाया और कहा कि जब तक ऐसे सन्त और महापुरुष इस पृथ्वी पर बने रहेंगे, तब तक पृथ्वी पर सुख, शान्ति और सम्पन्नता बनी रहेगी।

7. राजा ने गरीबों की जब्त की हुई चीजें वापस लौटाकर उन्हें घर जाने की आज्ञा दे दी और फसल न होने पर उस साल लगान नहीं वसूलने का आदेश भी दे दिया।

अथवा

प्रात:काल जागने से लेकर रात्रि में सोने तक दिनभर के क्रिया-कलापों का एकाग्र स्मरण ही दिनचर्या ध्यान कहलाता है। दिनचर्या ध्यान रात में सोते समय बिस्तर पर लेटकर किया जाता है।

8. व्याकरण खण्ड में 'पत्र-लेखन' देखें और स्वयं करें।

अथवा

10/103, साकेत नगर
घनश्यामपुरा, रीवा (म. प्र.)
दिनांक : 10.03.20 .....
प्रिय मित्र अशोक
नमस्कार।

काफी समय से तुम्हारा कोई भी पत्र नहीं प्राप्त हुआ है, मुझे कुछ चिन्ता हुई तो यह पत्र लिखने बैठ गया। कल ही यहाँ के प्रबुद्ध जनों की समिति की बैठक हुई थी, उसमें शहर की जल उपलब्धता की समस्या पर चर्चा हुई थी। गर्मी प्रारम्भ होते ही शहर भर में पानी के लिए मारा-मारी होने लगी है। इस समस्या के निदान के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो इस प्रकार हैं—

(i) वर्षा जल को तालाबों आदि में संरक्षित करें।
(ii) पानी व्यर्थ न बहने दिया जाए।
(iii) पानी आवश्यकता के अनुरूप प्रयोग करें।
(iv) अधिकाधिक पेड़-पौधों को लगाएँ।
(v) वर्षा जल को हार्वेस्ट किया जाए।

इस तरह के अनेक उपायों पर विचार किया गया। मैं चाहता हूँ कि तुम भी इस प्रक्रिया को गाँव और अपने नगर के पढ़े-लिखे लोगों को बताओ और जल संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करो।

पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में।
तुम्हारा अभिन्न मित्र
सुशील कुमार

9. **भावार्थ—** अपने मित्र से विशुद्ध प्रेम की कामना करता है। बाहरी आडम्बरों से सच्चाई और सहज प्रेम किया जाता है। मित्र लेखक को बिना पलक झपकाए, उस समय तक देखते रहते हैं, जब तक वह उनकी आँखों से ओझल न हो जाए। इस तरह का मित्र का व्यवहार निश्चित ही यह स्पष्ट करता है कि वे हमें अति स्नेह के साथ विदा कर रहे हैं। परन्तु इसमें बनावट भरी होती है।

अथवा

भावार्थ— धौम्य अपने शिष्य उपमन्यु को बताते हैं कि वह अभी अधखिले फल के समान है। वह अभी पूरी तरह फूल नहीं बन पाया। यदि ऐसे में उसे पौधे से अलग कर दिया जाए, तो वह अधखिला ही मुरझा जाएगा। इसी तरह उपमन्यु अभी फूल के समान है। उसके विकास हेतु अभी अपने गुरु रूपी पौधे के आश्रय की जरूरत है। यदि उसे गुरु रूपी पौधे से अलग कर दिया गया तो पुष्परूपी शिष्य-उपमन्यु अपनी अविकसित अवस्था में संकट में पड़ जाएगा। इस पर गुरु रूपी पौधे को अपार कष्ट होगा।

10. **भावार्थ—**कबीरदास जी कहते हैं कि कभी भी कल पर कोई काम मत छोड़ो। जो कल करना है, उसे आज कर लो और जो आज करना है उसे अभी कर लो। पता नहीं अगर कहीं अगले ही पल में प्रलय आ जाये, तो जीवन का अन्त हो जायेगा, फिर जो करना है वह कब करोगे?

अथवा

भावार्थ—हे वीरो! तुम्हें किसी भी प्रकार का मोह अपने जाल में न जकड़ सके, इसके लिए तुम एक तपस्वी का रूप धारण कर लो तथा तुम लोहे के हृदय वाले बन जाओ। इससे काल भी तुमसे भयभीत हो जाये। तुम्हें पक्के इरादों वाला बनना है, जैसे ध्रुव थे। हे वीरो! तुम्हें अगस्त्य ऋषि के समान बन जाना चाहिए जिससे बाध ााओं के प्रचंड सागर को भी वश में करना तुम्हारे लिए बिल्कुल भी कठिन नहीं होगा। इसलिए हे श्रेष्ठ वीरो! तुम्हें सम्भल कर तलवार की धार पर चलना है अर्थात् चुनौतीपूर्ण कार्य करना है।

11. हार की जीत

यह कहानी मानवीय मूल्यों की स्थापना करती है। इसमें प्रेम, संवेदना, दया, परोपकार, जनहित, त्याग आदि मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। यदि कोई व्यक्ति स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर लोकहित के भाव से आचरण करने लगता है, तो दुश्मन के हृदय में भी मानवता की भावना को जगा सकता है। प्रस्तुत कहानी में बाबा भारती ने ऐसे ही एक कार्य को अंजाम दिया है। जब बाबा भारती का घोड़ा चोरी होता है, तब उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि यदि लोगों को इस धोखाधड़ी की घटना का पता चल जायेगा, तो वे किसी गरीब की सहायता नहीं करेंगे। बाबा भारती के इस महान मानवतावादी विचारों का गहरा प्रभाव डाकू खड्गसिंह के व्यक्तित्व पर पड़ता है और उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। वह घोड़ा वापस कर देता है। इस प्रकार बाबा भारती अपने प्रिय घोड़े को वापस पाकर हारकर भी जीत जाते हैं।

12. रूपरेखा— 1. प्रस्तावना, 2. जन्म एवं शिक्षा, 3. सत्याग्रह का प्रारम्भ, 4. स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व, 5. जीवन का अन्त, 6. उपसंहार ।

प्रस्तावना— हमारे देश में समय-समय पर अनेक महापुरुषों का जन्म होता रहा है । राम, कृष्ण, बुद्ध आदि अनेक महापुरुषों ने संकट के समय जनता को दिशा दिखाई। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने वाले महापुरुषों में महात्मा गाँधी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है ।

जन्म एवं शिक्षा—गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था । उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था । तेरह वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता करमचन्द ने उनका विवाह कस्तूरबा के साथ कर दिया । उन्नीस वर्ष की अवस्था में बैरिस्टरी शिक्षा के लिए विलायत गए। विलायत जाते समय उनकी माता पुतलीबाई ने उनसे शराब तथा मांस का सेवन न करने की प्रतिज्ञा करा ली थी, जिसका पालन उन्होंने जीवनभर किया । सन् 1891 में वे बैरिस्टरी की परीक्षा पास करके भारत लौट आए ।

सत्याग्रह का प्रारम्भ— विदेश से वापस आकर गाँधीजी पोरबन्दर की एक फर्म के एक मुकदमे की पैरवी के लिए 1893 ई. में दक्षिण अफ्रीका गए । वहाँ गोरे शासकों द्वारा काले लोगों पर किए जा रहे अत्याचारों को देखकर उनका मन दु:खी हो गया । उन्होंने काले-गोरे का भेदभाव मिटाने के लिए सत्याग्रह किया । अन्त में गाँधी जी के सत्याग्रह के सामने गोरी सरकार (ब्रिटिश सरकार) को झुकना पड़ा और गाँधी जी की जीत हुई ।

स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व—भारत आते ही स्वतंत्रता-आन्दोलन की बागडोर गाँधी जी के हाथ में आ गई । उन्होंने भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित किया । उन्होंने अहिंसा और असहयोग का सहारा लिया । वे अनेक बार जेल गए । उन्होंने सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन, सन् 1930 में नमक सत्याग्रह, सन् 1942 में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के माध्यम से संघर्ष जारी रखा और 15 अगस्त, सन् 1947 को देश स्वतंत्र हो गया ।

जीवन का अन्त—देश के स्वतंत्र हो जाने पर गाँधी जी ने कोई पद स्वीकार नहीं किया । गाँधी जी पक्के वैष्णव थे। वे नियमित प्रार्थना-सभा में जाते थे । 30 जनवरी, 1948 ई. की संध्या को प्रार्थना सभा में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी । पूरा देश दु:ख और ग्लानि से भर उठा।

उपसंहार—महात्मा गाँधी को भारतवर्ष ही नहीं, पूरा विश्व आदर के साथ याद करता है। वे मानवता, सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे। गाँधी जैसे व्यक्ति हजारों-लाखों वर्षों में अवतरित होते हैं। सत्य और अहिंसा का पालन करते हुए राष्ट्र-सेवा में लग जाना ही गाँधी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(**नोट**— छात्र-छात्रा इसी प्रकार स्वयं निबंध लेखन का अभ्यास करें)

ooo